

कैनेडा से प्रकाशित साहित्यिक पत्रिका

Year 19, Issue 74
April-June, 2022

वसुधा



VASUDHA A CANADIAN PUBLICATION

FOUNDER-EDITOR-PUBLISHER : Dr. SNEH THAKORE
AWARDED BY THE PRESIDENT OF INDIA



संस्थापक, सम्पादक व प्रकाशक

डॉ. स्नेह ठाकुर

भारत के राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कृत

वर्ष १९ - अंक ७४, अप्रैल - जून २०२२



यूक्रेन

तारास शेवचेन्को

अनुवाद

पद्मश्री डॉ. श्याम सिंह शशि

ओ मेरे प्यारे अभाव—ग्रस्त यूक्रेन,
मेरी विधवा मातृभूमि तुझे प्रणाम ।

मेरी जन्मभूमि,
मुझे विश्वास है अपने ईश्वर पर
न्याय होगा जरूर एक दिन ।

वसुधा

(पोस्ट-डॉक्टरल फ़ेलोशिप अवार्डी)

(भारत के राष्ट्रपति द्वारा राष्ट्रपति भवन में "हिन्दी सेवी सम्मान" से सम्मानित)

(वर्ल्ड बुक ऑफ़ रिकॉर्ड, लन्दन में नाम अंकित)

संस्थापक, सम्पादक व प्रकाशक : डॉ. स्नेह ठाकुर

शीर्षक	रचयिता	पृष्ठ
सम्पादकीय		२
सखि, वसंत आया	सूर्य कान्त त्रिपाठी 'निराला'	६
गीता, अध्याय १२, भक्ति योग	अविनाश कुमार	७
जल जीवन की अमृत धारा	डॉ. कैलाशचंद शर्मा 'शंकी'	१०
युवाओं के लिए प्रेरक		
शाश्वत् महाग्रंथ : श्रीमद्भागवत् गीता	डॉ. संतोष खन्ना	११
बेटी को उसके जन्मदिन पर पत्र	अनिल जोशी	१२
शिव : समन्वय के देवता	बीरेंद्र कुमार यादव	१५
जागृति की हुंकार जगे	बन्दना घोष	१७
यूक्रेन में फँसे भारतीय बच्चों की तरफ से	अमलदार 'नीहार'	१८
हिन्दी विश्व भाषा और भारत विश्व गुरु कैसे बने?	डॉ. वेद प्रताप वैदिक	१९
नाद नित नीरव हृदय में	अमिता 'अशेष'	२१
एक भारत भाषा सेनानी : हरपाल सिंह राणा	डॉ. मोती लाल गुप्ता 'आदित्य'	२२
आहट	उमेश पंसारी	२४
गायतोंडे को मिला जीवन का		
नया मन्त्र 'नमो शरणं गच्छामि	ऋषि कटियार	२५
बची-खुची खुशी	बी.एल गौड़	२६
शबरी की भक्ति	संतोष बंसल	२८
हिंदी – भारत की भाव भाषा	डॉ. साकेत सहाय	३३
शांकर – प्रश्नोत्तरी का जीवन दर्शन	डॉ. साधना गुप्ता	३५
अनवरत	भावना सक्सेना	३८
निराला जी के काव्य में राष्ट्रीय चेतना	डॉ. विपुला सिंह	४०
हाँ, मैं हाउस-मेकर हूँ	मोनी बिजय	४३
यूक्रेन	पद्मश्री डॉ. श्याम सिंह 'शशि'	१अ
डॉ. स्नेह ठाकुर का रचना संसार		४४अ

रचनाओं में निहित विचार तथा मन्तव्य रचनाकारों के निजी विचार तथा मन्तव्य हैं। 'वसुधा' रचनाकारों के विचारों के लिए उत्तरदायी नहीं है। प्रकाशक की आज्ञा बिना कोई रचना किसी प्रकार उद्धृत नहीं की जानी चाहिए। प्रकाशित रचनाओं पर कोई पारिश्रमिक नहीं दिया जाएगा। रचनाएँ भेजने के लिए सम्पर्क पता :

16 Revlis Crescent, Toronto, Ontario M1V-1E9, Canada. TEL. 416-291-9534

वार्षिक शुल्क Annual subscription.....\$25.00

डाक द्वारा By Mail, Canada & USA.....\$35.00, Other Countries.....\$40.00

Website: <http://www.Vasudha1.webs.com>

E-mail: dr.snehthakore@gmail.com

सम्पादकीय

जब अभिमान चाहे वह पद का हो या अन्य किसी भी बात का, सर चढ़ कर बोलता है और फिर उसमें लोभ का मोह भी जुड़ जाता है, तब वह विनाश का कारण बन जाता है। पर इस विनाशी प्रकृति में मानव यह भूल जाता है कि वह न केवल स्वयं के विनाश की ओर बढ़ता है वरन वह स्वयं के साथ-साथ न जाने कितने निरपराधों के विनाश का कारण बनता है।

छोटे से छोटा बच्चा भी चाहे वह कितना भी भोला क्यों न हो, समय की नजाकत को पहचान ही लेता है और उस समय उसे किसी भी चाकलेट या लॉलीपॉप का लालच छू भी नहीं पाता। बच्चे भी चाहे वे कितने भी छोटे क्यों न हों तनाव का, विनाश का वातावरण पहचान ही लेते हैं।

यूक्रेन जिन परिस्थितियों से गुजर रहा है वह किसी से भी छुपी नहीं है। मेरे अग्रज पद्मश्री डॉ. श्याम सिंह शशि ने अपनी युवावस्था में जब विश्व के अनेक देशों की साहित्यिक तथा शोध यात्राएँ कीं, उस समय उन्हें वहाँ के सोवियत कवि तारास शेवचेन्को के काव्य-अनुशीलन का समय भी मिला। उन दिनों उन्होंने तारास शेवचेन्को के साथ ही साथ अन्य बहुत-से सोवियत कवियों की प्रतिनिधि कविताओं के अनुवाद किए।

तारास शेवचेन्को के क्रान्तिकारी साहित्य, रूस की ज़ारशाही तथा तारास के परिवार के दासमय जीवन की कविताओं ने उन्हें बहुत प्रभावित किया। तारास का जन्म मार्च ९, १८१४ में हुआ। उनके पिता का नाम हिहोरी था, जो उन्हें प्रेमचंद के होरी की याद दिलाता था। सोवियत यूक्रेन की गरीबी व दासों का जीवन इस क्रांति-साहित्य का जनक रहा है। शेवचेन्को ने ४७ वर्ष के जीवन-काल में अनेक उतार-चढ़ाव देखे थे। वे आजादी के लिए लड़े। १९४५ में जब वे अपनी यूक्रेन जन्मभूमि पर लौटे तो देखा उनका पूरा परिवार दासों का जीवन जी रहा है। उनका “कोबज़ार” इस दर्द भरे जीवन का गवाह है। उन्होंने अपना दास-जीवन व्यतीत करती अपनी बहन के बारे में जो लिखा उसका अनुवाद बड़े भाई शशि जी के शब्दों में -

“देखता हूँ एक नौका तैरती हुई
चली आ रही है मेरी ओर.....
और तभी एक लहर उठती है
पटक देती है नौका को भँवर के बीच
मेरी प्यारी बहन चीखती है -
पुकारती है मुझे सहायता के लिए -
मेरे अभिशप्त जीवन को देख
तुम्हें तरस नहीं आता मेरे भैया?
और मैं हड़बड़ाकर जाग उठता हूँ
देखता हूँ - मैं भी तो दास हूँ
अपनी बहन की तरह
कुछ नहीं कहता, बस लिखता हूँ

डॉ. शशि लिखते हैं कि - यह स्लाव जीवन एक व्यक्ति या परिवार का नहीं था बल्कि ज़ारशाही से जूझते शहर व देशों व प्रदेशों का रहा है। साहित्यिक भाषा के पुरोधा तारास शेवचेन्को के बारे में एक वक्तव्य उल्लेखनीय है - “सोवियत संघ इस कवि का ऋणी है। आज उसके नाम पर रूस के अतिरिक्त कनाडा, संयुक्त राष्ट्र अमेरिका आदि देशों में अनेक स्मारक निर्मित हैं। विश्व-साहित्य में भी उनका नाम आने लगा। लेनिन विचारधारा तथा विश्वविद्यालयों ने उनकी कविताओं को प्यार दिया, पाठ्य-पुस्तकों में स्थान दिया, तथा उनके नाम पर पुरस्कार भी देने शुरू किए।

कुछ और तथ्य : उन दिनों यूक्रेन गरीबी, भिक्षावृत्ति और दरिद्रता से गुजर रहा था। अन्धे चारण का मर्मस्पर्शी वर्णन तारास ने अपनी कविता में किया है, तो कहीं अंधी स्त्री को इंगित कर मानवीय अनुभूतियों का उच्चतम स्वरूप उद्घाटित किया। मैक्सिम गोर्खी, पुश्किन आदि उनके प्रेरणास्रोत रहे हैं।

अग्रज पद्मश्री डॉ. श्याम सिंह शशि जी की पुस्तक के अन्य सोवियत कवियों की रचनाओं में एक बूढ़ा हिन्दू, काली मंदिर, केसरिया साड़ी, महात्मा गाँधी, भारत, अग्निगीत आदि के चित्रण को छोड़ इस महान कवि की अंतिम पंक्तियों को उद्धरित करना समीचीन लगता है जिनमें उनका अनुवाद भी नीपर, द्निप्रद्व नदी की अजस्र धारा के साथ-साथ प्रवाहित होने लगता है। शेवचेन्को की कालजयी पंक्तियाँ हैं –

“मेरे देशवासियो,
ध्यान रहे
मेरे देश पर
फिर कभी
किसी ज़ार का दुःशासन न हो
और बहती रहे मेरी सुरसरी –
विशाल नीपर नदी
कीव शहर के बीच
हँसती मुस्कुराती;
द्निप्रद्व
स्वतंत्र,
अबाध,
अजस्र ...”

महाकवि की कुछ अन्य कविताएँ

स्वप्न

मैंने देखा एक स्वप्न –
लगा कोई उलूक
उड़ रहा है
तीव्र गति से
दूर ऊँचे विस्तृत आकाश में
चारागाहों और घाटियों के ऊपर
नदी तटी-कुल्याओं पर
वनों-अनुर्वर खेतों पर
और मैं भी उड़ने लगता हूँ
उसी के साथ
लेता हूँ विदा अपनी धरती से
अलविदा री दुनिया, विदा ओ धरती
बेमुरब्बत वतन तुझसे विदा।
क्रूर यातनाओं असह्य कष्ट को
छिपा लूँगा मैं बादलों के बीच
और तेरे लिए मेरे प्यारे यूक्रेनिया

छोड़ दूँगा मैं
 मेघों और आकाश को
 ताकि वे दे सकें ओस—कण मेरे आँसुओं के
 और बतिया सकें तुझसे।
 मेरी निर्धन असुहावन भूमि,
 मैं आऊँगा तेरे पास
 आधी रात को
 जब झरती होगी खेतों पर
 घनी ओस
 और तब हम चर्चा करेंगे
 हौले से गमगीन
 अपने भविष्य पर
 बात करेंगे रात भर
 तुम्हारे संत्रास से जूझते हुए
 और यह क्रम चलता रहेगा
 जब तक नन्हें शिशु युवा नहीं होते
 शत्रुओं से लड़ने को।
 मेरे मन तुम उदास क्यों हो,
 मेरी दीन असहाय आत्मा
 क्यों रोती हो व्यर्थ में?
 यहाँ कौन करेगा दया
 तुम पर?
 अफसोस, देखती नहीं हो?
 सुनती नहीं हो?
 कितना क्रूर क्रन्दन है
 जाओ और अच्छी तरह देखो।
 मैं फिर उड़ता हूँ
 नीले गगन में
 रूपहले बादलों के ऊपर कहीं
 जहाँ न कोई शासक है
 न कारागार है और न ही कोई कोड़ा
 किसी दास को मारने को
 न वहाँ तिरस्कार है
 और न ही सुनने को लोगों के विलाप
 जाओ जरा निकट से देखो
 उसी ईडन को
 जिसे तुम कभी छोड़ आए थे।

मेरी वसीयत

एक

मेरे प्रिय यूक्रेन देश में
 प्रभु मेरी मृत्यु देना
 मेरे प्यारे देशवासियों

मुझे जहाँ पर दफनाना
वहाँ कब्र पर ऊँची कोई
यादगार बनवा देना।

दो

हरे भरे खेतों में पानी
नीपर पर जब होगा भोर
अपनी आँखे देख सकूँगा
अपने कान सुनूँगा शोर।

तीन

मेरे प्रिय यूक्रेन देश में
नीपर बहती जायेगी
और शत्रु का रक्त पिए
नीले सागर मिल जायेगी
खेत और यह पर्वतमाला
मुझे छोड़ क्या पायेगी?

चार

दफना कर तुम मुझको भैया
मेरे ऊपर से चलना
भारी भरकम जंजीरों को
तोड़-मोड़ आगे बढ़ना
आजादी के लिए शत्रु का
खून बहा बढ़ते चलना।

पाँच

एक मस्त परिवार बनेगा
जब आजादी आयेगी
मीठे शब्दों में क्या तुमको
मेरी याद न आयेगी ?

छः

नीपर तट पर...

नीचे बहती है नीपर
मन्द-मन्द अजस्र धारा में
चेरी फल के साथ बैठी
एक युवती
कोई और नहीं थी

मेरी अपनी बहन थी। ...शेवचेन्को

अग्रज शशि जी का अनेकानेक धन्यवाद एवं आभार.

विश्व के हरएक स्थान पर जीवन शांति से, निर्बाध गति से सौहार्द्रता से चलता रहे, क्या विश्व-मानव से यह अपेक्षा न्यायसंगत नहीं है! युद्ध की विभीषिका से हरी-भरी धरती को रक्त-रंजित कर उसे वर्षों तक बंजर रखने में कौन-से अहं की सन्तुष्टि होती है? काश! मानव का राक्षसी मन अपने अहं की तुष्टि के लिए इस सर्वनाशी विनाश-प्रवृत्ति को पहचान उसका स्वयं के मन से निर्मूलन कर सके; और उसके स्थान पर अविनाशी ईश्वर की इस वसुंधरा को अपने प्रेम-पाश में ऐसा बाँधे कि इस धरती पर ही स्वर्ग उतर आए....इसी आकांक्षा और प्रार्थना के साथ - सस्नेह, स्नेह ठाकुर

सखि, वसंत आया

सूर्यकांत त्रिपाठी “निराला”

सखि, वसंत आया!
भरा हर्ष वन के मन
नवोत्कर्ष छाया
सखि, वसंत आया!
किसलय-वसना नव-वय-लतिका
मिली मधुर प्रिय उर तरु-पतिका,
मधुप-वृंद बंदी
पिक-स्वर नभ सरसाया
सखि, वसंत आया!
लता-मुकुल हार गंध-भार भर,
बही पवन बंद मंद मंदतर
जागी नयनों में वन-
यौवन की माया
सखि, वसंत आया!
आवृत सरसी उर सरसिज उठे
केशर के केश कली के छुटे
स्वर्ण शस्य अँचल
पृथ्वी का लहराया
सखि, वसंत आया!



गीता - अध्याय १२ – भक्ति योग

अविनाश कुमार

इस अध्याय में भगवान अर्जुन को भक्ति का मार्ग प्रशस्त करते हैं और सच्चे भक्त के लक्षणों से अवगत कराते हैं। प्रभु कहते हैं कि उनको प्राप्त करने के लिए ध्यान का अभ्यास पर्याप्त है, यदि अभ्यास न हो पावे तो कर्म करो, यदि कर्म भी न कर पाओ तो कर्म के फल की इच्छा-त्याग मात्र से प्रभु मिल जाते हैं।

अर्जुन उवाच : एक पूजता रूप सकारा, दूजा निराकार
कौन है दोनों में उत्तम, भगवन बोधें विचार (०१)

कृष्ण उवाच : मुझमें अपना चित्त लगा कर, पूजें जो रूप साकार
योगी श्रेष्ठ वही हैं अर्जुन, मुझको उनसे प्यार (०२)

किन्तु जी निराकार लगाएँ, परे इंद्रियाँ रख कर
मुझको स्वयं प्राप्त करें वे, अचल-ध्रुव और अक्षर (०३)

अचल भाव से मन में, मुझको, जो तू न स्वीकारे
तब तू पाये मात्र मुझे, अभ्यास योग के द्वारे (०९)

अभ्यास योग हे प्राणी, जो न तू कर पाये
अर्पण कर निज कर्म हरी में, प्राप्त मुझे कर जाए (१०)

यदि कर्मों को मुझमें अर्पण, करना है दुश्वार
कर्मों के फल की इच्छा, के त्याग दे सभी विचार (११)

अभ्यास योग से ध्यान उचित है, ध्यान से इच्छा त्याग
इच्छा तज ही पा जाता है, मनुष्य हरि अनुराग (१२)

प्रभु ने इच्छा त्याग को ब्रह्म प्राप्त करने का सर्वोत्तम उपाय बताया है, जो कि भक्ति, कर्म और योग से भी श्रेष्ठ है।

अध्याय १३ – क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ विभाग योग

इस अध्याय में हरि सृष्टि की रचना, उसके उद्देश्य, परमात्मा, पुरुष, प्रकृति, और जीव के निरूपण का वर्णन करते हैं। भगवान कहते हैं कि यह शरीर एक क्षेत्र के समान है, और उस क्षेत्र से बँधा हुआ प्रत्येक जीव क्षेत्रज्ञ के समान है। वे बताते हैं कि असल में तो प्रभु ही प्रत्येक जीव के क्षेत्र से बँधे हुए हैं।

हे अर्जुन, शरीर तुम्हारा, है एक क्षेत्र प्रकार
जो क्षेत्र से बंधित रहवे, कहे क्षेत्रज्ञ उसे संसार
सब क्षेत्रों में मैं हूँ, अतः क्षेत्रज्ञ मुझको जान
मेरे मत में बुद्ध ही समझे, क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ का ज्ञान
दस इंद्रियों, पंच तत्व विराजे, एक मन साकार
यही क्षेत्र है प्रकृति-विकृति का ले आकार

ईश्वर के हैं कान सभी, हैं नेत्र, मुख, पाँव और हाथ
वे सबमें स्थित, सब उनमें, ईश्वर सबके साथ
इस शरीर को भोगे, बरते, बन कर उसका मालिक
देह सहे, निर्देह रहे, भूत रहित वह भौतिक.

जीव स्वयं को अपने शरीर से बँधा हुआ समझता है, जबकि, शरीर से वह नहीं, बल्कि, स्वयं प्रभु बँधे हुए हैं। वह तो मात्र प्रभु की करोड़ों में से एक विभूति है। यदि मनुष्य अपने शरीर से स्वयं के बजाय ईश्वर को स्वरूपित मानेगा, तो अपने शरीर और उसके द्वारा किया कर्मों से स्वतः मुक्त हो जाएगा और परम हरि को प्राप्त होगा।

गुण, पुरुष, प्रकृति के भेद को, जो ज्ञानी अपनावे
इहलोक को भोगे फिर भी, पुनर्जन्म न पावे
ध्यान-योग अपनावे कोई, कोई सांख्य-योग अपनावे
कर्म-योग के द्वारा गण-गण, हरी पाद को पावे.

अध्याय १४ – गुण त्रय-विभाग योग

इस अध्याय में कृष्ण प्रकृति के तीन मूल गुणों – सात्विक, राजसी व तामसिक से अर्जुन का परिचय कराते हैं। वे गुणातीत पुरुष के लक्षण और भक्ति के द्वारा गुणों के पार हो जाने का पथ प्रशस्त करते हैं।

सात्विक, राजसी और तामसिक गुणों का ज्ञान अत्यंत आवश्यक है। प्रभु ने स्वयं इन गुणों के लक्षण विस्तार से बताएँ हैं, और उनके आधार पर शरीर की अवस्था, ज्ञान, तप और दान के कर्मों का फल एवं भक्ति निदान की व्याख्या की है।

सत्त्व, रजस और गुण तामस, प्रकृति के ही विकार,
निर्देह आत्मा को तीनों, देते शरीर आकार
सत्त्व प्रकाशक, निर्मल होवे, अज्ञानता को फाँद
सुख-ज्ञान आसक्ति से, काया में दे बाँध (Seeker)
रजो गुण है रागस्वरूप, कर्म की उत्पन्न इच्छा
देह से बाँधे, पैदा कर, कर्म औ फल की तृष्णा (Doer)
तम गुण है सबसे लुभावान, जिसका मूल अज्ञान
आलस्य, भोग विलास में, बाँधे सबका ध्यान. (Indulger)
सत्त्व तो जीते ज्ञान के द्वारा, रजो कर्म के नाम,
गुण तमस है सीमित रखता, देता मात्र अज्ञान
ज्यों काया के सब द्वारों में, जागे वेग प्रकाश
समझो, सत्गुण है बढ़ता, अनंत अविरल आकाश
किन्तु मन जो लोभ विराजे, रजो गुण बढ़ता जाये
नित नए-नए कर्मों की वृद्धि, अशांति, तृष्णा घर लाये
और तमोगुण जब हो बढ़ता, उसका फिर क्या कहना
अज्ञान, मोह, आलस्य है घेरे, जीवन रत्न का गहना
जी मे सत्त्व गुण फलते फूलते, जाते हैं जो प्राण,

वे मनुज कर जाते हैं, हरी लोक प्रस्थान
रजो गुण आरोहित हो तो, मनुष्य जन्म फिर पावे १
तमो गुण की आसक्ति लेकिन, योनि मूढ दिलावे२

रजो गुण से ग्रस्त होने पर मनुष्य में अतृप्त इच्छाएँ जागृत होती हैं एवं तमो गुण से प्रभावित व्यक्ति अतृप्त ध्येय से ग्रस्त रहता है।

सुख-दुख में एक सम रहो जो, मिट्टी सोने समान
प्रिय अप्रिय का भेद न जाने, निंदा या सम्मान
मान अपमान जिसे न भेदे, मित्र शत्रु न जाने
गुणातीत मनुष्य के जैसे, सब उनको पहचाने

अध्याय १५ – पुरुषोत्तम योग

इस अध्याय में हरि परब्रह्म पुरुषोत्तम का ज्ञान देते हैं, क्षर-अक्षर-अक्षरतीत का वर्णन करते हैं और माया रूपी संसार वृक्ष की व्याख्या करते हैं। प्रभु के अनुसार माया रूपी यह वृक्ष केवल आसक्ति हीन होकर ही काटा जा सकता है।

वृक्ष जगत का रूप दिखे जो, वैसा न मन भाए
अंत, न आदि, असंग के द्वारा, वृक्ष ये काटा जाए
जिस प्रकार वायु सुगंध को, अपनाए औ तज जाए
तीस प्रकार, यह जीव काया के, बंधन बदले जाए
मैं धरा में शक्ति बनकर, पहले अन्न उपजाऊँ
मैं ही देह मे अग्नि बनकर, वही अन्न पचाऊँ
मैं हूँ सबके मन मे स्थित, ज्ञान, मोह भंडार
ज्ञाता, ज्ञानी, ज्ञानेय हूँ मैं, मैं ही दोष संहार
क्षर – अक्षर के बीच है पलता, यह सारा संसार
जीव क्षरत है, जीवात्मा - अक्षर अपरम्पार



जल जीवन की अमृत धारा

डॉ. कैलाशचंद शर्मा 'शंकी'

जल बिन पल नहीं, पल बिन जीवन कहाँ
आज बिन ना कल कल बिन भविष्य कहाँ
सींचे जल प्रकृति के हर मौसम के रंग को
जल बिन अन्न नहीं अन्न बिन हविष्य कहाँ?

मेघ बरसा कर जल हर जीवन बचाता है
मानव दानव बन हर क्षण उसे घटाता है
अनादर करना उसका ठीक नहीं कदापि
जलकण प्राणियों के वंश को बढ़ाता है।

जल थल बनाए सृष्टि उसका करो आरक्षण
बचाने सृष्टि को तुम जल का करो संरक्षण
प्रकृति को नष्ट करने का ये पाप भला नहीं
मतलबी तुम इसका कभी ना करो भक्षण।

अलौकिक लौकिक दोनों जल से होते खुश
अस्तित्व मिटाकर करो न जीवन को मायूस
तीनों काल में जल बरसे अमृत धारा बनके
शिव भक्ति रक्षा करे इसकी बन पीयूष।

जल संजीवनी बन ईश्वर का आशीष पाती
प्रलय काल में भी बस यही जग दिखलाती
आसमां विहीन हो जाता जब सारा ब्रह्माण्ड
जल बन बल विश्व में तड़ित सी चमकाती।

प्रभु सा रूप तेरा हर रूप में खिल जाए
जिसमें मिला दे उसी के रूप में ढल जाए
तेरी शाश्वतता को शीश नवाकर आदर हो
तेरा संरक्षण करके सारा जग जीवन पाए।

युवाओं के लिए प्रेरक शाश्वत महाग्रंथ : श्रीमद्भागवत गीता

डॉ. सन्तोष खन्ना

(वर्ल्ड बुक ऑफ़ रिकॉर्ड, लन्दन में नाम अंकित)

श्रीमद्भागवत गीता एक अनुपम, अद्भुत और अद्वितीय महाग्रंथ है। यह महाग्रंथ न केवल भारत के लोगों के लिये है अपितु यह समूची मानवता के कल्याण और त्राण के लिए है। इसमें वेद, उपनिषद और अन्य संस्कृत शास्त्रों का निकष अनुस्यूत है। इस के अध्ययन से हम अध्यात्म, धर्म, दर्शन और समूचे जीवन शास्त्र से साक्षात्कार कर सकते हैं। यह हमारे जीवन में आने वाली सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के द्वार खोलता है। महाभारत का युद्ध आरम्भ होने से ठीक पहले भगवान कृष्ण ने अर्जुन को जो उपदेश दिया, वहीं श्रीमद्भागवत गीता के नाम से प्रसिद्ध है। गीता महाभारत ग्रंथ के भीष्म पर्व का अंग है। इसमें अठारह अध्याय हैं और उसमें सात सौ श्लोक हैं।

इस महाग्रंथ के अनुशीलन ने कोटि-कोटि प्राणियों का उद्धार किया है और अनेक मानवों का मार्गदर्शन किया है। शंकराचार्य सहित अनेक ऋषि-मनीषियों ने गीता पर भाष्यों की रचना कर गीता जी में अवगुंठित ज्ञान का सार मनुष्य-मात्र के लिये उपलब्ध किया है। इसलिए कहा जाता है कि शंकराचार्य जी ने गीता का जैसा अनुपम भाष्य किया है वह विरल है। उन्होंने गीता जी का ज्ञानपरक भाष्य किया है। स्वतंत्रता सेनानी बाल गंगाधर तिलक ने गीतारहस्य के रूप में जो गीता जी का भाष्य किया है वह कर्मपरक है अर्थात् गीता जी में जो महत्व कर्म का बताया गया है उसका दिग्दर्शन करते हुए मानव-मात्र को संदेश दिया है कि मनुष्य का कर्म करना उसका धर्म भी है, कर्तव्य भी है। निष्काम कर्म को ही उत्तम बताया गया है।

अब तक गीता के विश्व की अनेक भाषाओं में अनुवाद हो चुके हैं। हिंदी में हरिवंश राय बच्चन सहित कई साहित्यकारों ने अनुवाद किए हैं। कुछ समय पहले मैंने एक मुस्लिम मनीषी का उर्दू में बहुत सुंदर छंदबद्ध अनुवाद की बात भी जानी है।

कहा जाता है कि गीता का अध्ययन प्रायः लोग बुढ़ापे की अवस्था में जा कर करते हैं जिसे एक भ्रांत धारणा ही कहा जा सकता है। गीता जी को एक सम्पूर्ण जीवन शास्त्र कहा जाता है और जिसमें कर्म पर बहुत महत्व दिया गया है; उसे तो जीवन के आरम्भ में ही पढ़ना चाहिए अर्थात् इस ग्रंथ का छात्र जीवन की उस अवस्था से पठन-पाठन शुरू कर देना चाहिए जब वे इस प्रकार के विषय को समझने के लिए सक्षम हो जायें। गीता सनातन धर्म का कालजयी ग्रंथ है। यहाँ जब हम धर्म शब्द का प्रयोग करते हैं तो उसका अर्थ पंथ या सम्प्रदाय नहीं वरन् जीवन जीने की पद्धति है। उस अर्थ में हम इस ग्रंथ को पंथ - निरपेक्ष कह सकते हैं। वैसे भी गीता महाभारत के युद्ध से पहले कृष्ण-अर्जुन सम्वाद पर आधारित है। जहाँ एक ओर अर्जुन किसी भी बात को समझे बिना उसे मानने के लिए तैयार नहीं है चाहे उसे अर्जुन के सखा ने या तो कहे भगवान कृष्ण ने ही क्यों न कहा हो, वहीं दूसरी ओर भगवान कृष्ण अर्जुन की हर जिज्ञासा का, हर प्रश्न का उत्तर देते हैं। यह ग्रंथ मानव मात्र को अंध श्रद्धा के विरुद्ध सचेत करता भी दिखाई देता है और सब को विवेकवान बनाता है। यह भी कह सकते हैं कि कृष्ण-अर्जुन सम्वाद दो युवाओं

में सम्वाद है और अर्जुन की युवा अवस्था में उत्पन्न हुए संशय और समस्याओं का समाधान चिर युवा भगवान कृष्ण कर रहे हैं अर्थात् यह ग्रंथ जीवन की हर आयु के संशयों का निराकरण करने वाला है।

भारत में हमारे संस्कारों और चेतना में जो परमपावनी कल्मषहरिनी गंगा जी का महत्व है उससे भी बढ़ कर गीता जी की महिमा है। गंगा जिस तरह हमारे शारीरिक कल्मष धोती हैं वैसे ही गीता जी हमारे अंतर्मन के कल्मष को दूर कर चेतना का संचार करती हैं। इसके ज्ञान से हम अँधेरे से उजाले की ओर जाते हैं, अज्ञान से ज्ञान की ओर प्रस्थान करते हैं और मृत्यु से अमरता की ओर जाते हैं।

गीता में कर्म की महिमा अपरम्पार है। कर्म केवल धर्म सम्बंधी नहीं बल्कि जीवन के हर क्षेत्र के कर्म का महत्व है। वह कर्म रिश्ते-नातों, सफलता-असफलता, राजनीति, नीति, राष्ट्र-निर्माण जैसे क्षेत्र के सम्बंध में भी है। अगर व्यक्ति जीवन में शांति, सफलता और स्वास्थ्य चाहता है, गीता व्यक्ति का पथ प्रशस्त कर सकती है। निष्कर्षतः कह सकते हैं कि जीवन में हर व्यक्ति अर्जुन है और गीता जी अनिर्णय की स्थिति में उसे राह दिखाती है।

इन कुछ शब्दों में गीता जी की अवर्णनीय महिमा का वर्णन सम्भव नहीं है। उसे समझने के लिए हर व्यक्ति को, विशेष रूप से युवाओं को गीता जैसा महाग्रंथ के ज्ञानागार के ताले खोल कर उसके प्रकाश और प्रभामंडल के सौजन्य को प्राप्त करना होगा। जब वह उसके अकूत ब्रह्माण्ड में जायेंगे, तब उसके रहस्य खुलते जायेंगे। तभी युवाओं में मानवीय और भारतीयता के संस्कारों का उदय होगा। यहाँ हम गीता जी के अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रायः उद्धृत किए जाने वाले श्लोक से गीता-रूपी सूर्य को उजाले में प्रवेश के लिए आह्वान करते हैं – “कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचनः ।”

बेटी को उसके जन्मदिन पर पत्र

अनिल जोशी

(उपाध्यक्ष – केन्द्रीय हिंदी संस्थान)

आशा है तुम सकुशल होगी,
शुभकामनाएँ,
और,
तुम्हारी भावी यात्रा के बारे में कुछ राय
सुनो तुम्हें क्या पता है कि,
तुम यहाँ से एक गंध लेकर गई थी.
अनचाही गंध ।
गंध,
तुम्हारी माँ के मसालों की,
उसकी झिड़कियों,

उसके प्यार की गंध,
किताबों के शैल्फ की,
मेरे स्टडी रूम के,
दरवाजे, खिड़कियों से छन-छन कर,
तुम्हारे भीतर चाहे-अनचाहे,
चले गए विचार की ।
मैं जानता हूँ,
तुम्हें यह गंध पसंद नहीं,
पर यह गंध तुम्हारे साथ चलेगी,
लोग तुम्हें इसी गंध से ही पहचानेंगे,
और,
एक दिन,
तुम इस गंध की अभ्यस्त हो जाओगी,
और,
शायद इससे प्यार करने लगे,
हो सकता है,
तुम फिर इसी गंध के आलोक में,
चीजों को पहचानना शुरू कर दो,
मैं जानता हूँ,
तुम्हारी हर चीज को अस्वीकार करने की आदत है,
लेकिन अकेले में ही सही,
तुम मानोगी,
हो सकता है,
हमारे विचारों में,
ना हो धार,
पर एक सद्भावना थी।
सुनो,
मैं सीमाओं में लुंजपुंज वर्तमान हूँ,
और तुम सीमाहीन भविष्य,
इसलिए मैं तुम्हें क्या राय दे सकता हूँ।
मैं तुम्हें उड़ने से पहले,
कुछ निर्देश नहीं देना चाहता,
चूँकि मैं जानता हूँ,
कि गिरना उड़ान का ही हिस्सा है।
यात्रा की थकान, दिशाभ्रम, संशय, यात्रा के जोखम,

तुम्हारे व्यक्तित्व को,
अलाव की तरह प्रकाशित कर दूँगे,
जिसके प्रकाश में लोग पाएँगे अपनी मंजिल ।
हर स्थिति में,
तुम्हारे पास एक ताली है,
व्यक्ति नहीं, पुस्तक नहीं,
आत्मा का विवेक,
घनघोर अँधेरे में उससे पूछना प्रश्न,
वह तुम्हें उत्तर देगा,
अगर तुम मान लोगी,
तो तुम्हें थपथपा कर,
तुममें गुम हो जाएगा,
अगर उसको नहीं मानोगी,
तो प्रश्न की तरह खड़ा रहेगा,
जैसे,
यम के सामने खड़ा रहा था,
नचिकेता,
भूखा-प्यासा, जिद्दी, हठी, अडिग,
ठीक तुम्हारी तरह ।
मैं देखता हूँ तुम्हें,
एक लड़की से एक चिड़िया,
फिर एक लकीर,
फिर एक बिंदु बन,
अंतरिक्ष में गुम होते हुए,
कितने ग्रह, उपग्रह, अंतरिक्षों के अनचीन्हे स्थल,
इंतजार में है,
कि तुम वहाँ तक पहुँचो,
उन्हें स्पर्श कर,
उन्हें जीवन दो,
उनके अस्तित्व की घोषणा करो,
और उनका व अपना होना सार्थक करो,
मैं तुम्हें जन्मदिन की शुभकामना देता हूँ ।



शिव : समन्वय के देवता

बीरेंद्र कुमार यादव

(सदस्य हिन्दी सलाहकार समिति, भारत सरकार)

भारतीय संस्कृति विश्व में अपना विशेष पहचान रखती है. अध्यात्म का प्रतिपादन हमेशा से भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग रहा है. अध्यात्म का मूल केन्द्र वह अलौकिक शक्ति है, जो ब्रह्माण्ड में सर्वत्र विद्यमान है.

तीनों देवों में शिव को सर्वाधिक शक्तिशाली माना जाता है. उनकी पूजा ब्रह्मा और विष्णु ने भी की है. सृष्टि का निर्माण ब्रह्मा ने किया, विष्णु उसके पालक रक्षक का दायित्व निभाते हैं और उस सृष्टि में जो असंतुलन पैदा होता है उसका नियंत्रण भगवान सदाशिव करते हैं. लेकिन शिवजी की भूमिका केवल संहारक, मृत्यु देने का नहीं वे तो मृत्युंजय हैं, समन्वय के देवता हैं .

शिवपुराण के अनुसार महाशिवरात्रि के दिन भगवान सदाशिव सबसे पहले देश भर में द्वादश ज्योतिर्लिंग के रूप में प्रकट हुए थे.

शिवलिंग रूप में प्रकट हुए थे. ये द्वादश ज्योतिर्लिंग हैं सोमनाथ ज्योतिर्लिंग, गुजरात, मल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिंग, आंध्र प्रदेश, महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग, उज्जैन, मध्यप्रदेश, ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग मध्यप्रदेश, केदारनाथ ज्योतिर्लिंग, उत्तराखंड, भीमाशंकर ज्योतिर्लिंग, पूणे महाराष्ट्र, विश्वनाथ ज्योतिर्लिंग, वाराणसी उत्तर प्रदेश, त्र्यम्बकेश्वर ज्योतिर्लिंग, नासिक महाराष्ट्र, वैद्यनाथ ज्योतिर्लिंग, देवघर, झारखंड, नागेश्वर ज्योतिर्लिंग, गुजरात, रामेश्वर ज्योतिर्लिंग, तमिलनाडु, घृष्णेश्वर, महाराष्ट्र. इन १२ ज्योतिर्लिंगों के प्रकट होने के उपलक्ष्य में उत्सव के रूप में महाशिवरात्रि मनाई जाती है और भगवान शिव की पूजा की जाती है. वह दिन फाल्गुन माह के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तिथि थी.

पौराणिक कथाओं के अनुसार शिव और शक्ति का महा मिलन महाशिवरात्रि को हुआ था. शिव और शक्ति एक दूसरे से विवाह बंधन में बँधे थे. वैरागी शिव ने वैराग्य छोड़कर गृहस्थ आश्रम में प्रवेश किया था. इस वजह से कई स्थानों पर महाशिवरात्रि के अवसर पर शिव बारात निकाली जाती है.

अब हम विज्ञान की दृष्टि से सोचें तो विश्व की उत्पत्ति का स्रोत अब तक एक अज्ञात पदार्थ या "गॉड पार्टिकल" है, जो सृष्टि का मूल तत्व है. यूरोपीय नाभिकीय अनुसंधान संस्थान (CERN) अपने बहुचर्चित और महत्वाकांक्षी मिशन "लार्ज हाइड्रोन कोलोइडर" में उसी मूल तत्व की तलाश में लगा हुआ है.

१. यह अपने आप में एक रोमांच का विषय है कि जिस मूल तत्व की अवधारणा विज्ञान ने पिछले कुछ वर्षों में की है, उसकी कल्पना भारतीय संस्कृति और अध्यात्म ने सदियों पहले कर ली थी. "ऊँ" शब्द की संकल्पना उसी देवत्व का अंश है. भारतीय संस्कृति के अनुसार इस ध्वनि में निहित शक्ति ही जीवन की उत्पत्ति, विनाश, और पुनर्सृजन का मूल है. ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति और विनाश की इस सतत् श्रृंखला का अंश भारतीय स्थापत्य कला में दर्शित होता है. विश्व मूर्तिकला की सबसे अलौकिक कृतियों में "नटराज"

का स्थान सर्वोच्च है। आठवीं और बारहवीं शताब्दी के मध्य चोल राजाओं द्वारा निर्मित नटराज की मूर्तियाँ आकार में विशाल न होने के बावजूद सम्पूर्ण विश्व की उत्पत्ति, गतिशीलता, विनाश और पुनर्सृजन को प्रस्तुत करती हैं।

नटराज की संकल्पना को समझने के लिए हिन्दू धर्म के प्रमुख देव शिव का वर्णन आवश्यक है। नटराज जो शिव ही हैं, नाट्य और संगीत शास्त्र के अधिष्ठाता देव माने गए हैं। १०८ प्रकार के नाट्यों की उत्पत्ति शिव से ही मानी गई है। इनमें लास्य और तांडव भी शामिल हैं। संगीत, नृत्य, योग, व्याकरण और भैषज्य के मूल प्रवर्तक शिव ही कहे गए हैं।

२. शिव के नटराज स्वरूप में विश्व के सभी रहस्य विद्यमान हैं। नटराज के चार हाथ हैं, उनका एक पैर नृत्य की मुद्रा में है और दूसरा पैर राक्षस के ऊपर स्थिर है। उनके प्रत्येक अंग की मुद्रा अनेक संकेत देती है। नटराज के ऊपर वाला दाहिना हाथ डमरू हस्त मुद्रा में है, यह सृजन का प्रतीक है। डमरू की आवाज समय और जीवन की गतिशीलता का द्योतक है। यह हाथ सम्पूर्ण सृष्टि का निर्माण करता है। उनका ऊपर का बायाँ हाथ अग्नि लिए हुए है उनकी यह मुद्रा विनाश का संदेश देती है और इस सत्य को स्थापित करती है कि सृष्टि में सृजन और विनाश की प्रक्रिया सदा एक गति से साथ-साथ चलती रहती है।

दाहिना नीचे का तीसरा हाथ एक विशेष "अभय मुद्रा" में है। यह विश्व के सहृदय और संत जनों को निर्भयता से जीने का संदेश और आशीर्वाद देता है। नटराज का बायाँ चौथा हाथ गजहस्त मुद्रा में है और उसकी अंगुलियाँ नृत्य में उठे हुए बाएँ पैर की ओर इंगित हैं। यह मुद्रा अज्ञानता के अंधकार से मुक्ति और उन्नति का संदेश देती है। नटराज का दूसरा पैर एक दैत्य का दमन कर रहा है। यह दैत्य अज्ञानता और अहंकार का प्रतीक है। शिव के चारों ओर उठ रही आग की लपटें इस ब्रह्माण्ड का प्रतीक हैं। उनके शरीर पर से लहराते सर्प कुण्डलिनी शक्ति के द्योतक हैं और पुनर्जन्म का संदेश देती है?

उनकी सम्पूर्ण आकृति ॐ कार स्वरूप जैसी दिखती है।

३. नटराज की मूर्ति संदेश देती है कि विज्ञान, संस्कृति, और कला अलग नहीं रहे। संस्कृति और कला की कल्पना को पहचान कर उससे जुड़कर विज्ञान जीवों का कल्याण कर सकता है।

नृत्य की तीव्रता के कारण नटराज के केश फैले हुए हैं। केश का जड़ के निकट का भाग जल की लहरों की भाँति और अंतिम सिरा अग्नि की लपटों की तरह है, जो उत्पत्ति और विनाश के संतुलन को दिखाता है। जटाओं में मौजूद गंगा विश्व कल्याण का उद्देश्य और हंसियाकर चंद्रमा शिव के तेज में शीतलता का बोध कराता है। यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि शिव का नटराज स्वरूप भारतीय संस्कृति की विरासत का सूत्र रूप है। शिव को समर्पित "ॐ" ध्वनि ही है, जो स्वयं सृजन और स्वयं विनाश करती है। विश्व उसी देव तत्व का विस्तृत रूप है। शिव के नटराज रूप में विश्व के सभी रहस्य समाए हुए हैं।



जागृति की हुंकार जगे

बन्दना घोष

सप्त सिंधु से शैल शिखर तक,
 रोर जगे,
 शांत धरा और नभ दिग्गज भी,
 डोल उठे,
 डमरू-त्रिशूल का प्रलय राग
 में नर्तन हो,
 हर दिशा से हर हर हर,
 हर हर का शोर उठे।
 सरयू के आँचल से उठी
 हर लहर कहे,
 चौपाई बसे, वह अग्निधर्मा,
 कहाँ राम मेरे?
 ऋषि वशिष्ठ की पुण्य धरा के
 भाग्य जगे,
 जागे फिर से पुरुषोत्तम
 श्री राम जगे।
 अग्नि उगलती कलम शिखाएँ
 राणाओं के शौर्य लिखें,
 जयचंदों की भीड़ से अब,
 कोई अलख जगाता,
 "भगत" जगे।
 विश्वासों की उस शिला-पटल
 पर,
 सत्य लिखित इतिहास जगे।
 जागृति की हुंकार जगे,
 जगे "भरत" वंश,
 संतान जगे।



यूक्रेन में फैसे भारतीय बच्चों की तरफ से

अमलदार 'नीहार'

जिसका दर्द अकेले उसका, किसका कौन हुआ?
किसने बढ़कर आँसू पोछे, दृग का कोर छुआ?
बने रहे हम इस दुनिया में संकट में फरियादी,
सभी किनारे--अपने प्यारे, किसने सदय दवा दी?

देख रहे हैं मौत सामने--कहो आग का दरिया,
थमी साँस ये, थर-थर काँपे, है कौन गुनाह किया?
शूली पर ही टँगे प्राण हैं, आँखें--बहे पनाले,
माँ दुखिया, बप्पा को चिन्ता, कौन सुने ये नाले?

मानवता मर गयी कहाँ पर, ममता-करुणा रोती,
पलकों में सौ ख्वाब सजाये बहते आँसू-मोती।
अहंकार में डूबा कोई सत्ता का अभिलाषी,
पथरायी हैं आँखें कितनी अपनेपन की प्यासी?

हिंदी विश्व-भाषा और भारत विश्व-गुरु कैसे बने?

डॉ. वेदप्रताप वैदिक

(लेखक, भारतीय भाषा सम्मेलन के अध्यक्ष हैं)

विश्व हिंदी दिवस और प्रवासी भारतीय दिवस, ये दोनों इतने महत्वपूर्ण दिवस हैं कि इन्हें भारत की जनता और सरकारें यदि पूरे मनोयोग से मनाएँ तो अगले कुछ ही वर्षों में भारत सांस्कृतिक और आर्थिक दृष्टि से विश्व की महाशक्ति बन सकता है। जो लोग भारत को विश्व गुरु बना हुआ देखना चाहते हैं, उनकी जिम्मेदारी तो और भी ज्यादा है। विश्व हिंदी दिवस १० जनवरी को था और प्रवासी भारतीय दिवस ९ जनवरी को। ये दोनों दिवस साथ-साथ आते हैं लेकिन इस वर्ष इन दिवसों पर भारत में धूम मचना तो दूर, पत्ता भी नहीं खड़का। कोरोना की महामारी में सावधानी जरूरी है लेकिन इसी दौरान 'झूम' पर झूम-झूमकर रैलियाँ हुईं, संगोष्ठियाँ हुईं, कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन हुए लेकिन इन दोनों महत्वपूर्ण दिवसों को हमारे प्रचारतंत्र, नेताओं और समाजसेवियों ने याद तक नहीं किया।

विश्व हिंदी-दिवस पहली बार १९७५ की १० जनवरी को नागपुर में आयोजित हुआ था। प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी ने इसका उद्घाटन किया था। कई देशों के हिंदी-प्रेमी उसमें शामिल हुए थे। अब तक लगभग दर्जन भर विभिन्न देशों में ये सम्मेलन हो चुके हैं लेकिन इसकी ठोस उपलब्धियाँ क्या हैं? हिंदी की बैलगाड़ी आज भी वहीं खड़ी है, जहाँ वह अब से ४६ साल पहले खड़ी थी। क्या हिंदी किसी विश्व-मंच पर आज तक प्रतिष्ठित हुई? क्या संयुक्तराष्ट्र संघ की छह आधिकारिक भाषाओं में वह आज तक शामिल हो पाई? भारत तो ५४ देशों के राष्ट्रकुल का सबसे बड़ा देश है। क्या कभी राष्ट्रकुल में हिंदी की प्रतिष्ठा हुई? जिन राष्ट्रों में हमारे भारतीय लोग बहुसंख्यक हैं, क्या वहाँ हिंदी को राष्ट्रभाषा का दर्जा मिला? क्या वहाँ छात्रों को अनिवार्य रूप से हिंदी पढ़ाई जाती है? क्या कोई भी विषय की पढ़ाई का माध्यम वहाँ हिंदी है?

मान लें कि मैंने ऊपर जो काम बताए हैं, वे काम सरकारों के हैं लेकिन क्या जनता ने भी हिंदी को विश्व-भाषा का दर्जा दिलाने के लिए कोई ठोस कदम उठाए? हम भारतीय लोग और खास तौर से हम हिंदीभाषी लोग ही अपने महत्वपूर्ण आधिकारिक काम हिंदी में नहीं करते तो विदेशों में रहनेवाले भारतीयों को दोष क्यों दें? हिंदीभाषी लोग अपने हस्ताक्षर तक हिंदी में नहीं करते। वे अपने खातों और कानूनी दस्तावेजों पर अँग्रेजी में दस्तखत करते हैं जबकि स्वभाषा में हस्ताक्षर करने को कोई ताकत नहीं रोक सकती। विदेशों में रहनेवाले भारतीय नागरिक यदि अपने हस्ताक्षर हिंदी में करने लगे तो उनकी अलग पहचान बनेगी और वे जानेंगे कि भारत की भाषा हिंदी है, जो विश्व-भाषा बनने के योग्य है। पिछले ५०-५५ साल में मैं लगभग ८० देशों में गया हूँ। मेरे किसी भी पारपत्र (पासपोर्ट) पर दस्तखत अँग्रेजी में नहीं हैं। किसी भी विदेशी बैंक ने मेरे हिंदी हस्ताक्षरवाले चेक को अस्वीकार नहीं किया है।

यह संतोष का विषय हो सकता है कि आजकल दुनिया के दर्जनों विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जाने लगी है लेकिन कुछ अपवादों को छोड़कर विदेशी लोगों को उनकी सरकारों द्वारा हिंदी इसलिए पढ़ाई जाती है कि उन्हें या तो भारत के साथ कूटनीति या जासूसी के काम में लगाना होता है। हमारे कुछ

भारतीय हिंदी-प्रेमी मित्रों के प्रयत्नों से कुछ देशों में हिंदी पाठशालाएँ खोली गई हैं, यह सराहनीय कदम है।

यदि हिंदी को विश्व-भाषा बनना है तो उसे अभी कई सीढ़ियाँ चढ़नी होंगी लेकिन सबसे पहले उसे संयुक्तराष्ट्र की एक आधिकारिक भाषा बनना होगा। इस समय छह आधिकारिक भाषाएँ हैं - अंग्रेजी, फ्रांसीसी, चीनी, रूसी, हिस्पानी और अरबी ! इनमें से एक भी भाषा ऐसी नहीं है, जिसके बोलनेवालों की संख्या दुनिया के हिंदीभाषियों से ज्यादा है। अंग्रेजी दुनिया के बस चार-पाँच देशों की ही भाषा है। इसे अंग्रेजों के पूर्व गुलाम देशों के दो से पाँच प्रतिशत लोग इस्तेमाल करते हैं। जहाँ तक चीनी भाषा का सवाल है, उसके आधिकारिक मंडारिन भाषा-भाषियों की संख्या भी हिंदी-भाषियों से कम है। यह तथ्य मुझे चीन के शहरों और गाँवों में दर्जनों बार घूमने से मालूम पड़ा है। हिंदी को इन सभी भाषाओं के पहले संयुक्तराष्ट्र की भाषा होना चाहिए था लेकिन जिस भाषा को हमने भारत में ही नौकरानी बना रखा है, वह विश्व मंच पर महारानियों के साथ कैसे बैठ सकती है? बस, यहाँ संतोष की बात यही है कि अटलजी और मोदीजी, दो ऐसे प्रधानमंत्री हुए हैं, जिन्होंने अपने भाषण वहाँ हिंदी में दिए। १९९९ में भारतीय प्रतिनिधि के तौर पर मैंने संयुक्तराष्ट्र संघ में हिंदी में भाषण देना चाहा तो मालूम पड़ा कि उस समय उसके अनुवाद की ही कोई व्यवस्था नहीं थी।

संस्कृत की पुत्री होने और दर्जनों एशियाई भाषाओं का संगम होने के कारण हिंदी का शब्द भंडार दुनिया की किसी भी भाषा से बहुत बड़ा है। यदि वह संयुक्तराष्ट्र की भाषा बन जाए तो वह विश्व की सभी भाषाओं को कृतार्थ कर सकती है। इससे भारत में चल रही अंग्रेजी की गुलामी भी घटेगी और हमारी अंतरराष्ट्रीय कूटनीति और व्यापार में भी चार चाँद लग जाएँगे।

इस समय विदेशों में प्रवासी भारतीयों की संख्या लगभग सवा तीन करोड़ है। दुनिया के ज्यादातर देशों की आबादी भी इतनी नहीं है। अब से ५०-५५ साल पहले मैं जब न्यूयार्क में पढ़ता था तो किसी से हिंदी में बात करने के लिए मैं तरस जाता था लेकिन अब हाल यह है कि जब भी मैं दुबई जाता हूँ तो लगता है कि छोटे-मोटे भारत में ही आ गया हूँ। आज दुनिया के सभी प्रमुख देशों में प्रवासी भारतीय प्रभावशाली पदों पर हैं और कुछ देशों में तो वे राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, मंत्री और सांसद हैं। उनमें जातीय, धार्मिक और भाषिक कट्टरता भी बहुत कम है। वे औसतन विदेशियों से अधिक सम्पन्न भी हैं। उन्होंने इस साल भारत को साठे छह लाख करोड़ रु. भेजे हैं। अपनी मातृभूमि को दुनिया में सबसे ज्यादा पैसा भेजनेवाले भारतीय ही हैं। उनके चारित्रिक और पारिवारिक आचरण का उन देशों में गहरा प्रभाव है। यदि इन प्रवासियों को प्रेरित किया जाए तो वे न केवल हिंदी को विश्व भाषा बनाने में जबरदस्त योगदान करेंगे बल्कि भारतीय संस्कृति को वे विश्व-संस्कृति के तौर पर स्वीकृत भी करवा सकते हैं। जो लोग भारत को विश्व-गुरु बना देखना चाहते हैं, इस मामले में उनकी जिम्मेदारी कहीं ज्यादा है।



नाद नित नीरव हृदय में

अमिता अशेष

(सम्पादक अखण्ड भारत)

निज भुजा में बाँध लूँ मैं, व्योम की सारी घटायें ।
शीश पर ज्यों गंग को, बाँधती शिव की जटायें ।

भय नहीं अब है प्रलय से
झंझावातों के वलय से
दग्ध अन्तर कब बुझा है
शिशिर के शीतल मलय से
धधकती है अनल अन्तर ज्यों तड़ित हों मेघमालाएँ ।

है हलाहल पान मेरा
वेदना है गान मेरा
मृत्यु से डरना है कैसा
मृत्युंजयी अभियान मेरा
मृत्यु का हर क्षण वरण है, हूँ काल की काली शिरायें ।

अंक में कर लो समाहित
अभ्यान्तर हो अवगाहित
प्रलय प्रिय प्रियतम सुनो
प्रेम प्रज्ञा परिमल प्रवाहित
घोर गर्जन मन हृदय में, ज्यों उदधि लहरें उठायें ।

आत्मजा हूँ मैं प्रकृति की
मैं प्रलय, मैं सर्जना हूँ
वसुधा से उपजा नवांकुर
नाश की मैं गर्जना हूँ
अरुण की अरुणिम किरण में तृष्णा तिमिर की वेदनायें ।

कौन हूँ मैं, कौन हो तुम
भेद करना है असम्भव
मैं परे अब हो चली हूँ
जय मिले या हो पराभव
नाद नित नीरव हृदय में, बाँचती अनहद ऋचाएँ ।

एक भारत भाषा सेनानी : हरपाल सिंह राणा

डॉ. मोतीलाल गुप्ता 'आदित्य'

हर साल १५ अगस्त को हम स्वतंत्रता दिवस तो मनाते हैं लेकिन बिना स्वभाषा के स्व तंत्र कैसे हो सकता है और बिना स्व तंत्र के देश सही अर्थों में स्वतंत्र कैसे हो सकता है ? भारत की भाषा हिंदी, जिसे सभी स्वतंत्रता सेनानियों ने राष्ट्रभाषा कहा, जो भारत संघ की राजभाषा बनी, उस हिंदी को उसका सही स्थान तो अभी तक नहीं मिल सका। हिंदी को उसका सही स्थान दिलवाने की लड़ाई बहुत कम व्यक्तियों ने लड़ी है। उन्हीं चंद सिपाहियों में एक नाम है कादीपुर, दिल्ली के हरपाल सिंह राणा, जो पिछले ३० वर्षों से देश में हिंदी को उसका कानूनी दर्जा और सही स्थान दिलवाने की लड़ाई लड़ रहे हैं। जो जनभाषा में न्याय के लिए न्यायपालिका से ही न्याय की जंग लड़ रहे हैं।

हरपाल सिंह राणा बताते हैं कि बहुत कम व्यक्तियों को ही मालूम है कि भारतीय न्याय व्यवस्था में सिर्फ जिला न्यायालय में ही नहीं बल्कि उच्चतम न्यायालय में भी अब हिंदी में न केवल मुकदमा दायर किया जा सकता है, बहस की जा सकती है बल्कि उसका आदेश भी हिंदी में ही प्राप्त किया जा सकता है। हिंदी में मुकदमा दाखिल करने के लिए उच्चतम न्यायालय में न्यायालय की हिंदी समिति वादी की मदद भी करती है। यह सब मुमकिन हो पाया है हरपाल सिंह राणा के अथक परिश्रम की वजह से। दरअसल संविधान के अनुच्छेद ३४८ के तहत उच्च न्यायालय और उच्चतम न्यायालय की भाषा अंग्रेजी है। उच्चतम न्यायालय की नियमावली २०१३ भी अंग्रेजी में बनी हुई है और उसके तहत उच्चतम न्यायालय के सभी प्रकार के कार्य अंग्रेजी में ही किए जाते हैं। लेकिन संविधान की ३५०, ३५१ धाराओं सहित ऐसे अनेकों प्रावधान हैं जिनके तहत हिंदी को बढ़ावा दिया जाना चाहिए और देश का नागरिक अपनी मातृभाषा में प्रतिवेदन दे सकता है और आवेदन कर सकता है और उसका जवाब उसी भाषा में देना अनिवार्य है।

वर्ष २०१७ में हरपाल सिंह राणा ने उच्चतम न्यायालय की अंग्रेजी में बनी नियमावली को हिंदी में बनवाने के लिए बिना वकील के स्वयं मुकदमा दाखिल किया और स्वयं उच्चतम न्यायालय में हिंदी में वार्तालाप (बहस) की, इसमें हरपाल सिंह राणा की मुख्य माँग को तो नहीं माना गया लेकिन कुछ ऐतिहासिक फैसले हुए, उच्चतम न्यायालय ने भी संविधान और हिंदी भाषा का सम्मान करते हुए स्वतंत्रता के बाद ऐतिहासिक पहल करते हुए इसी मुकदमे में पहली बार उच्चतम न्यायालय ने अपना आदेश हिंदी में जारी किया और कहा कि उच्चतम न्यायालय में हिंदी में मुकदमे दाखिल किए जा सकते हैं, मुकदमा दाखिल करने वाले व्यक्तियों की मदद उच्चतम न्यायालय की हिंदी समिति करेगी।

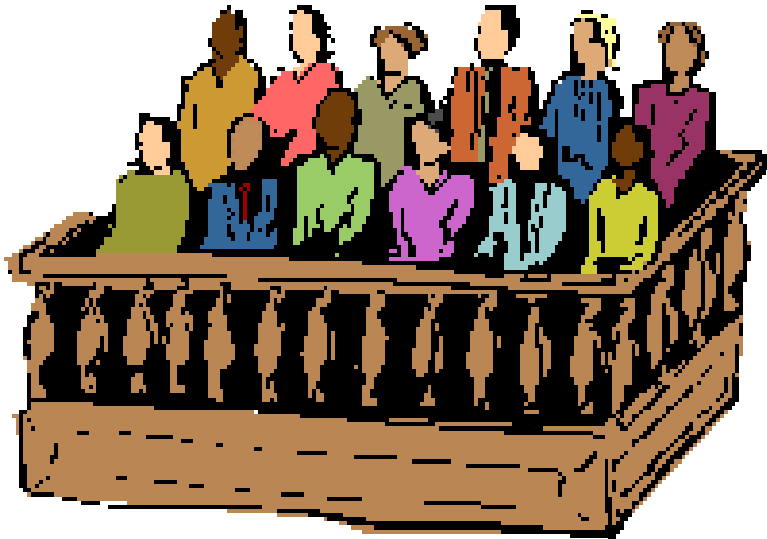
हरपाल सिंह राणा बताते हैं कि इससे पहले वर्ष २०१६ में आजादी के बाद पहली बार उन्होंने जिला न्यायालय रोहिणी, दिल्ली में हिंदी में मुकदमा दाखिल किया था। ये उन्हीं के भागीरथ प्रयासों का परिणाम है कि आज दिल्ली के सभी जिला न्यायालयों में हिंदी न्यायाधीशों की नियुक्ति हुई और सभी जिला न्यायालय में हिंदी विभाग स्थापित किए गए। उन्होंने पटना उच्च न्यायालय में

भी १९७२ से विचाराधीन हिंदी भाषा को लागू कराने के लिए हिंदी में मुकदमे में हिस्सा लिया, हिंदी में बहस की और उच्च न्यायालय, पटना ने ३० अप्रैल २०१९ को हिंदी लागू करने के लिए बिहार सरकार से अधिसूचना जारी करने के लिए कहा।

हरपाल सिंह राणा पिछले लगभग ३० वर्षों से हिंदी को उसका सम्मान और न्यायोचित स्थान दिलाने की लड़ाई लड़ रहे हैं। इसके लिए 'भारतीय भाषा आंदोलन' द्वारा संघ लोक सेवा आयोग पर भी लगातार १४ वर्षों तक विश्व के सबसे लम्बे धरने में सहभागी रहे हैं, जिसमें देश के पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह, पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी, पूर्व प्रधानमंत्री वीपी सिंह सहित अनेकों महत्वपूर्ण व्यक्ति हिस्सा ले चुके हैं। इसके अलावा भारत सरकार और राज्य सरकारों में भी हिंदी भाषा लागू करवाने के लिए अनेकों महत्वपूर्ण आदेश पारित करवाए। राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री कार्यालयों सहित अनेकों विभागों, मंत्रालयों द्वारा कार्यालयों में अंग्रेजी में कार्य करने और अंग्रेजी में पत्र भेजने के खिलाफ की गई कार्रवाई में राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री कार्यालय सहित अनेकों कार्यालय खेद जता चुके हैं और आगे से हिंदी में लिखे पत्रों का जवाब हिंदी में देने का लिखित में आश्वासन दे चुके हैं।

वे कहते हैं कि आज अंग्रेजी का विरोध करने की आवश्यकता नहीं है बल्कि हिंदी को और राज्यों में राज्यों की भाषाओं और मातृभाषा को बढ़ावा देने की आवश्यकता है क्योंकि मातृभाषा के बगैर व्यक्ति गूँगा है और बगैर भाषा के स्वतंत्रता के बाद भी आजादी अधूरी है। नई शिक्षा नीति में भी मातृ भाषाओं पर जोर दिया गया है लेकिन इसके लिए भी जनजागरण, एक लम्बे संघर्ष और जन-आंदोलन की आवश्यकता है। उनके प्रयास अभी भी जारी हैं। संघ की राजभाषा तथा जन-भाषाओं के लिए किसी भी हद तक तन, मन और धन से जिस प्रकार वे लगे हैं, ऐसा दूसरा उदाहरण कम ही दिखता है।

भारतीय भाषाओं के ऐसे सजग प्रहरी, भारत-भाषा प्रहरी ही नहीं भारत-भाषा सेनानी श्री हरपाल सिंह राणा को 'वैश्विक हिंदी सम्मेलन' की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ। आने वाले समय में जब भारत-भाषा सेनानियों का इतिहास लिखा जाएगा तो उनमें हरपाल सिंह राणा का नाम भी प्रमुखता से लिखा जाएगा।



आहट

उमेश पंसारी

(समाजसेवी व कॉमनवेल्थ स्वर्ण पुरस्कार विजेता)

ये आहट भी बेजुबान है,
अनकही सी दास्तान है।
खुशी देगी या देगी ग़म,
इससे हम अनजान हैं।।
शुभ हो तो मेहमान है,
अशुभ हो तो हैरान है।
होनी का अहसास देती,
यही इसका अहसान है।।
व्यवहार का संज्ञान है,
मासूम है पर शैतान है।
स्वेच्छा से आ आना,
आहट का ये गुमान है।।
स्वतंत्र है और शांत है,
जैसे खुला आसमान है।
अद्भुत चमत्कारों भरी,
यह प्रकृति महान है।।

गायतोंडे को मिला जीवन का नया मंत्र, 'नमो शरणं गच्छामि'

ऋषि कटियार

प्राचीन काल में जम्बूद्वीप के एक घने जंगल में गायतोंडे नाम का डाकू रहता था। वह चोरी, जेबकतरी, उगाही, वसूली, मटका, स्मगलिंग जैसे कामों में लिप्त था। बाद में उसने अपना कार्यक्षेत्र बढ़ाते हुए हवाला, आईपीएल, ब्लैकमनी आदि में भी पदार्पण किया और वैधानिक, राजनीतिक, न्यायिक व्यवस्था के सहयोग और अनुकम्पा से अत्यंत सफल हुआ। फिर भी अपनी जड़ों से जुड़ा गायतोंडे नॉस्टैलजिया के नाम पर कभी-कभी लूटपाट भी कर लेता था।

एक दिन की बात है, दिन ढल चुका था, अँधेरा हो चुका था। मतलब एक रात की बात है। एक अधेड़ उम्र का हल्की दाढ़ी वाला व्यक्ति वहाँ से गुजर रहा था। गायतोंडे ने उसे घेर लिया। वह व्यक्ति अपने फोन से सेल्फी लेने में लगा हुआ था। गायतोंडे को देखते ही उसने विकट्री की मुद्रा में दो ऊँगलियाँ उठा दीं और पोज देने लगा। गायतोंडे ने कहा, 'सुनो, मैं गायतोंडे डाकू हूँ। क्या तुम्हें मुझसे डर नहीं लगता? व्यक्ति ने कहा, 'मुझे किस बात का डर है? यह फोन चाइनीज है। कैश पूरे देश में नहीं है। खाता स्विस् है। फकीर आदमी हूँ। झोला उठा के निकला हूँ। तुम मुझसे क्या ले लोगे?'

गायतोंडे ने कहा, 'आया हूँ, कुछ तो लेकर ही जाऊँगा। आऊ!' व्यक्ति ने कहा, 'मितरो, मतलब मित्र, मैं तो भयभीत नहीं हूँ, पर तुम अवश्य भयाक्रांत लग रहे हो। गायतोंडे ने कहा, 'मुझे किस बात का भय? व्यक्ति बोला, 'भय! हाहाहा, इस युग में तो नेक से नेक व्यक्ति भी भय में है। घर में गाय है तो गौरक्षकों का भय, हिन्दू तो 'अल्लाह-हू-अकबर' का भय, मुस्लिम हो तब 'जय श्री राम' का भय, औरत हो तो रेप का भय, पुरुष हो तो 'मी टू' का भय, NRC का भय, जाति, भ्रांति, प्रान्त, क्लांट, आतंक का भय। GST, टैक्स, लूट, दंगे, दाब, माँब का भय। और तू तो बुरे कामों दंगे, लूट, हवाला, करप्शन, ब्लैक मनी में भी शामिल है। तुझे इन कर्मों का फल भी तो भुगतना होगा।'

गायतोंडे ने कहा, 'मैं जो बुरे कर्म करता हूँ। वे तो मैं नेता जी, पार्टी के लिए करता हूँ। मैं तो (कार्य)कर्ता मात्र हूँ, कारक तो मेरे नेता, पुलिस, फ़र्ज़ी ऐक्टिविस्ट आदि हैं। वे सब भी तो मेरे पाप के भागीदार होंगे।' व्यक्ति ने कहा, 'नहीं, तू अकेला ही होगा, जा तू उनसे पूछ ला, मैं यहीं सेल्फी ले रहा हूँ। आह! क्या मनोहारी दृश्य है। मानो इस उपवन में चारु चंद्र की चंचल किरणें खेल रही हों। तू जा, मैं इधर ही मिलूँगा! गायतोंडे ने सोचा, 'तू - तड़ाक से बात करने वाले इस वाचाल को बाद में देखूँगा और वह पार्टी ऑफिस पहुँचा। नेता जी ने कहा, 'मैं कैसे भागीदार, मैं तो तुम्हे जानता तक नहीं। कौन है यह, निकालो इसे।

उसने पुलिस, ऐक्टिविस्ट साथियों से पूछा, सबने उसके पाप कर्मों से साफ अनभिज्ञता जाहिर कर दी। गायतोंडे डर गया। वह वापस जाकर उस व्यक्ति के पैरों में पड़ गया और बचने के लिए जीवन की भीख माँगने लगा। व्यक्ति ने उसे उठाया, असत्य के महत्व का ज्ञान दिया और कहा, 'सुनो, तुम अब बुरे फँस

चुके हो। अगले सीजन में 'त्रिवेदी' भी नहीं बचेगा। माना तुम्हारी इलाके पर पकड़ बहुत है, पर जो कर्म तुमने किए हैं। उनके लिए तुम्हारा मरना या जेल जाना तो तय है। गायतोंडे ने कहा, '...तो मैं क्या करूँ प्रभु, मार्ग दिखलाइए?

व्यक्ति ने कहा, 'अब तू इंतजार कर बस।' गायतोंडे बोला, 'प्रभु अगर मैं मरा-मरा बोलूँगा, तो राम-राम निकलने से पहले लोग सच में मुझे मार देंगे। आजकल पूरा सुनने, समझने या लॉजिक का धैर्य किसी के पास नहीं है। व्यक्ति ने कहा, 'हाँ, बात तो सही है। अब बस एक ही रास्ता है, 'नमो शरणम गच्छामि'। अगले दिन गायतोंडे ने 'पतित पावनि, पाप निवारिणी' पार्टी जॉइन कर ली। कालान्तर में गायतोंडे सिलेबस की किताबों, मीडिया, फिल्मों आदि में उच्च कोटि देशभक्त, युग प्रणेता, प्रवर्तक, युग पुरुष महर्षि 'गाय' पांडेय' नाम से जाना गया। कहानी से शिक्षा, 'सच ही कहा गया है, कि 'नमो' शब्द में बहुत शक्ति है। जिसने एक पतित, निकृष्ट, करप्ट व्यक्ति को महर्षि का पद प्रदान किया।

बची-खुची खुशी

बी.एल. गौड़

जब हम बड़े हुए
याद नहीं
किस कक्षा में पास हुए
तब देखी
माँ के चेहरे पर अजब खुशी ।
जब हम जवाँ हुए
जाँबाज़ बने
घर लौटे जोड़े से
माँ फूली नहीं समाई
लगा कि जैसे
आँधी खुशियों की आई
घर-आँगन-भीतर-बाहर
सब के सब महके महके
भैया-भाभी, चाचा-चाची
बहना-बुआ, बच्चे-कच्चे

सब के सब
 चहके चहके
 जब कंगना की रसम हुई
 तब देखी
 माँ के चेहरे पर गजब खुशी ।
 जब हम काम-काज में फँसे
 गुणा-भाग में धँसे
 अम्बार लगे धन के
 पर थोड़े से अंतराल में
 सारी उमर गई
 प्रखर धूप जीवन की
 जाने कब सुरमई हुई
 फिर धीरे-धीरे चुपके-चुपके
 उतरी आँगन साँझ
 अंतर कलह पी गई रौनक
 खुशियाँ हो गई बाँझ
 आनन-फ़ानन
 चौड़े आँगन
 होने लगी चिनाई
 सूनी आँखें अम्मा ताके
 जबरन रोक रुलाई
 कटे वृक्ष से घर के मुखिया
 बैठे द्वार अकेले
 ताक रहे सूने अम्बर में
 विगत काल के मेले
 एक आस में अब तक जीवित
 नहीं पता कब आते-जाते
 किसी राह में
 फिर मिल जाए
 बची-खुची बेसबब खुशी ।



शबरी की भक्ति

संतोष बंसल

(वर्ल्ड बुक ऑफ़ रिकॉर्ड, लन्दन में नाम अंकित)

इस टॉपिक पर चर्चा से पूर्व हमें 'भक्ति' शब्द का अर्थ एवं श्री राम और शबरी प्रसंग के सन्दर्भ में उसकी व्याख्या करनी होगी, क्योंकि इसी कथा के अंतर्गत प्रभु श्री राम के मुख से नवधा भक्ति का स्पष्टीकरण हुआ है। अतः हम सबसे पहले भक्ति और हिंदी साहित्य के इतिहास में पूर्व मध्यकाल की महत्ता पर बात करेंगे। 'भक्ति' शब्द की व्युत्पत्ति 'भज' धातु से हुई है, जिसका अर्थ 'सेवा करना' या भजना है। अब अगर हम 'भक्ति' की परम्परा का अध्ययन करें तो भक्ति के स्वरूप को उद्घाटित करने में देवर्षि नारद के भक्ति सूत्र का प्रमुख स्थान है। 'नारद भक्ति सूत्र' में कहा गया है कि परमात्मा के प्रति परम प्रेम को भक्ति कहते हैं अर्थात् श्रद्धा और ईष्ट देवता के प्रति आसक्ति। इस प्रकार भक्ति का अर्थ हुआ - ईश्वर और इंसान का आपसी सम्बन्ध स्थापित होना, जिसे मानव का अध्यात्म की ओर झुकाव भी कह सकते हैं। इसमें हृदय पक्ष की प्रधानता रहती है एवं प्रेम पर आश्रित होने से भक्ति को प्रेमाभक्ति की संज्ञा भी दी जाती है। इस प्रेम को प्राप्त कर लेने पर भक्त न तो कुछ चाहता है, न चिंता करता है, न द्वेष करता है, न किसी वस्तु में आसक्त होता है और न ही विषय भोगादि में उत्साही होता है। बल्कि इस प्रेमरूपा भक्ति को पाकर भक्त सिद्ध हो जाता है, तृप्त हो जाता है। मुनि शांडिल्य ने भी जब भक्ति सूत्रों का निर्माण किया, तब तक भक्ति का प्रतिपादन हो चुका था। किन्तु शांडिल्य सूत्रों में 'परा' एवं 'अपरा' नाम से भक्ति के दो भेद बताये गए और कहा गया कि भक्ति भाव आने पर ही भव-चक्र का बंधन कटता है। जब तक भक्ति का उदय नहीं होता, आत्मा जन्म-मरण के चक्र में घूमती रहती है। तत्पश्चात् महाभारत, गीता, पुराण इत्यादि पौराणिक ग्रंथों के सार तत्व को सूत्रों में समाविष्ट करने के निमित्त भक्ति पर नित्य नवीन विचार गुम्फित हुए, जिनमें जाति-पाति का भेद नहीं माना गया। अर्थात् भक्ति-पथ सभी भक्तों के लिए समान रूप से उन्मुक्त है एवं द्विजेतर भक्त भी भक्ति मार्ग का अनुसरण करके भगवान की भक्ति कर सकता है। इस प्रकार श्रीमद्भागवत महापुराण इत्यादि ग्रंथों ने जनमानस पर व्यापक प्रभाव डाला, जिससे भक्ति आंदोलन का सूत्रपात हुआ।

दक्षिण भारत के आलवार भक्तों की भक्ति पद्धति से नारद की भक्ति में बहुत साम्य लक्षित होता है, सम्भवतः इसी कारण कुछ विद्वानों ने रागानुगा-भक्ति का उत्स दक्षिण में स्वीकार किया है। इसीलिए यह उक्ति बहुत प्रसिद्ध है - 'भक्ति द्राविड उपजी, लाये रामानंद।' उत्तर भारत में राम भक्ति का प्रवर्तन आचार्य रामानुज की परम्परा में राघवानंद द्वारा प्रारम्भ हुआ और उनके शिष्य रामानंद ने उसे युगानुकूल भाव-भूमि प्रदान की। आचार्य रामानंद ने ही सर्वप्रथम संकुचित रूढ़ियों में आबद्ध और बाह्य आक्रमणों से संव्रस्त, समसामयिक हिन्दू समाज को रामभक्ति का अभेद कवच प्रदान किया। भक्ति-भावना को ऊँच-नीच एवं बाह्य आडम्बरों से मुक्त करने का श्रेय भी आचार्य रामानंद को ही प्राप्त है, जिनकी शिष्य परम्परा

में निर्गुणोपासक एवं सगुणोपासक दोनों ही थे। वैसे तो राम-कथा संस्कृत, पालि, प्राकृत एवं अपभ्रंश साहित्य में निरंतर प्रवाहमान रही है, किन्तु 'वाल्मीकि रामायण' को ही आदि काव्य मानकर इसका मूल स्रोत स्वीकार किया जाता है। आधुनिक भारतीय भाषाओं में भी रामकाव्य का लेखन लगातार हुआ है, लेकिन साहित्य के मध्यकालीन भक्ति साहित्य में गोस्वामी तुलसीदास कृत 'श्री रामचरितमानस' अत्यंत लोकप्रिय ग्रन्थ है। उन्होंने ही सर्वप्रथम नाथपंथियों के हठयोग की हृदय-शून्य दशा को लक्षित करते हुए कहा, 'गोरख जगाओ जोग, भक्ति भगायो लोग।' एवं 'मानस' में 'अरण्यकाण्ड' के शबरी कथा-प्रसंग में नवधा भक्ति का व्याख्यान किया, जो स्वयं प्रभु श्रीराम के मुख से निसृत है। महाकवि तुलसीदास ने नवधा भक्ति के नौ भेदों के तात्त्विक दर्शन को जिस सरलता और सहजता से वर्णित किया है, उसी भाव-विचार के कारण ही यह विद्वानों के मध्य चर्चा का विषय है। इसीलिए नवधा भक्ति के नौ प्रकारों का उल्लेख करने से पूर्व हम शबरी गाथा का सार रूप में बखान करेंगे, जो लोक कथाओं और दन्त कथाओं के माध्यम से प्राचीन काल से ही भक्तों और श्रोताओं में लोक प्रिय रही है। यद्यपि बाबा तुलसीदास ने इस कथा के लोक प्रसंग को ज्यादा विस्तार नहीं दिया, तथापि 'मानस' में यह प्रसंग अपने आधुनिक सन्दर्भ में दलित-विमर्श के साथ स्त्री सशक्तिकरण की चर्चा भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

यद्यपि 'मानस' की राम कथा में श्री राम-लक्ष्मण के पम्पा सरोवर पर शबरी के आश्रम में आने का वर्णन है, किन्तु यहाँ हम शबरी की भक्ति का प्रारूप जानने से पहले उस के जीवन की पूर्वपीठिका जानेंगे। शबरी एक भील राजा की कोल कन्या थी, जिसके विवाह के समय उनके पिता ने तीन सौ बकरे मँगवाए। इस पर शबरी को आघात लगा कि मेरे लग्न में अनेक जीवों की हिंसा होगी। इसीलिए वह विवाह न करने का निश्चय करके मध्य रात्रि को घर छोड़ देती है एवं मातंग ऋषि के आश्रम के पास पहुँचती है। वहाँ के सात्विक, शांत वातावरण से प्रभावित होकर शबरी ऋषियों की गुप्त सेवा करने का विचार करती है। वह पूरे दिन जंगल में सुन्दर फल-फूल इकट्ठे करती और एक-एक ऋषि के आश्रम में रख देती। सभी ऋषि बहुत सवेरे पम्पा सरोवर में स्नान करने जाते, इसके लिए शबरी सवेरे उठकर अँधेरे में मार्ग में बुहारी लगाती और कुश-कंटक दूर करती। सब ऋषियों को आश्चर्य होता कि कौन गुप्त रूप से हमारी सेवा कर रहा है? एक रात मातंग ऋषि जाग रहे थे, उन्होंने पूछा, "बेटी तुम कौन हो? और कहाँ रहती हो?" शबरी ने अपनी भीलनी जाति बताई तथा वृक्ष के ऊपर रहने की बात कही, यह सुनकर मातंग ऋषि का हृदय पिघल गया। उसके अतिशय शुद्ध आचरण को देख, उन्होंने अपने आश्रम में ही शबरी के लिए झोपड़ी बनवा दी। वहाँ वह रोज मातंग ऋषि से रामकथा सुनती, जिससे प्रसन्न होकर उन्होंने उसे श्री राम मन्त्र की दीक्षा भी दी। प्राण त्यागने से पूर्व ऋषि ने शबरी को अपने पास बुलाया और कहा, "मैंने राम-नाम की कथा की है, किन्तु आज तक मुझे श्री राम के दर्शन नहीं हुए। लेकिन तुम मुझसे अधिक भाग्यशाली हो, क्योंकि श्री राम तुम्हारे घर आवेंगे।" शबरी के समयावधि पूछने पर ऋषि बोले, "वे कब आवेंगे, यह नहीं बता सकता? क्योंकि अभी श्री दशरथ महाराज को पुत्र कामेष्टि यज्ञ करना है, उसके बाद उन्हें पुत्र रत्न प्राप्ति होगी।" इस तरह सारी रामकथा सुनाते हुए श्री राम के चौदह वर्ष के बनवास के दौरान आने

की बात कह ऋषि ने शबरी को कहा, "उनकों काल का बंधन नहीं है, परन्तु एक न एक दिन तेरे घर रामजी अवश्य आवेंगे।"

वास्तव में 'श्री राम चरित मानस' के सात काण्ड मनुष्य के उत्कर्ष की सात सीढ़ियाँ हैं, इसीलिए बाबा तुलसीदास ने प्रत्येक काण्ड को सोपान नाम दिया। श्री राम और शबरी प्रसंग 'अरण्यकाण्ड' में आता है, जिसका तात्पर्य है - मनुष्य का वन में वास। प्राचीन वर्णाश्रम व्यवस्था में भी वानप्रस्थ आश्रम का जीवन के अंतिम पहर में बहुत महत्व था। हमारे यहाँ उपदेश भी है कि अगर ज्ञान-भक्ति बढ़ानी हो तो थोड़े दिन घर छोड़कर वन में एकांत वास करना चाहिए। क्योंकि मन के संयम और वासनाओं का विनाश के लिए वन में रहने की आवश्यकता होती है, वैसे भी प्रकृति का साहचर्य मनुष्य को बहुत कुछ सिखाता है। इस प्रकार मातंग ऋषि के देहावसान के उपरान्त बहुत वर्षों तक शबरी माँ ने दिव्य तपश्चर्या की और तप करते-करते वह खुद भी बहुत वृद्ध हो गयी। शबरी महायोगिनी थी, वृद्धावस्था के बावजूद श्रीराम दर्शन की आशा बनी हुई थी। गुरुदेव ने श्री राम के पधारने का कहा था, इसीलिए उनके दर्शन के बिना मैं नहीं मरूँगी। इसी आशा से वह रघुनाथ जी की प्रतीक्षा करती और रामजी के लिए मीठे कंद-मूल एकत्रित करती। घर की चारों दिशाओं के सभी मार्गों पर बुहारी करती कि न जाने कौन से रास्ते वे नंगे पाँव पधारेंगे? अन्ततः चौदह वर्ष के वनवास में सीता-हरण के उपरान्त रघुनाथ जी चलते-चलते शबरी की खोज करते हुए उसके आश्रम पधारे। बड़े-बड़े ऋषियों ने श्रीराम से अनुनय-निवेदन किया, उन्हें अपने आश्रम में पधारने के लिए मनाने लगे। किन्तु प्रभु को तो अपने ऐसे भक्त को दर्शन देने हैं, जो नवधा भक्ति की मिसाल है। जिसने अपने सात्विक आचरण के साथ ताउम्र प्रभु श्री राम के दर्शन का इन्तजार किया है। झोपड़ी में शबरी ने दर्भ यानी कुश के दो आसन दिए, उन आसनों पर श्री राम-लक्ष्मण विराजे। लोक कथाओं में आता है कि शबरी ने बीन-बीन कर सुंदर बेर रख रखे थे, जिन्हें वह चख-चखकर प्रभु को अर्पण करती। अत्यंत प्रेम में शबरी को यह भी याद नहीं रहा कि वह श्रीराम को जूठे फल खिला रही है। रामजी शबरी के हृदय के भाव को देखते हैं, जो बहुत शुद्ध और निर्मल है। शबरी ने बार-बार वंदन करते हुए कहा - 'केहि विधि अस्तुति करौं तुम्हारी। अधम जाति मैं जड़मति भारी। अधम ते अधम अधम अति नारी। तिन्ह महुँ मैं मति मंद अधारी।

अगर हम देखें तो 'अरण्यकाण्ड' में दो कथाएँ हैं शबरी की कथा और सूर्यपूजा की। किन्तु श्री राम जी ने सूर्यपूजा पर दृष्टि नहीं डाली, क्योंकि वह 'काम' की प्रतीक है जबकि शबरी 'प्रेम' की प्रतिमा। इसीलिए बड़े-बड़े ऋषियों के आश्रम में प्रभु नहीं पधारे, उन्होंने शबरी को कृतार्थ किया। शबरी का चरित्र अतिशय दिव्य है, क्योंकि परमात्मा में उसका अनन्य प्रेम है। वह कहती है कि मैं नीच, अधम, अपढ़ हूँ, मैं किस प्रकार आपकी स्तुति करूँ ? लेकिन प्रभु ने शबरी से कहा कि मेरी भक्ति करने के लिए बहुत ज्ञानवान होने की अथवा ब्राह्मण के घर जन्म लेने की आवश्यकता नहीं है। भक्ति में प्रेम मुख्य है, कुल, जाति, क्षेत्र या स्थान गौण हैं। प्रभु श्री राम ने शबरी को सम्बोधित कर कहा, 'नवधा भक्ति कहउँ तोहि पाहीं। सावधान सुनु धरु मन माहीं।' यहाँ बाबा तुलसीदास उपदेशक के रूप में भी सामने आते हैं, किन्तु ये

उपदेश पात्र के स्वभाव और चरित्र-चित्रण के साधन रूप हैं। विशेष बात यह है कि शबरी प्रसंग में प्रभु श्री राम के मुख से नवधा भक्ति का उपदेश इसे अत्यंत सरस और सर्वग्राही बना देता है। सम्भवतः इसी विशेषता को लक्षित करते हुए आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने महाकवि तुलसीदास की वाणी के लिए लिखा, "एक ओर तो वह व्यक्तिगत साधना के मार्ग में विरागपूर्ण शुद्ध भगवत भक्ति का उपदेश करती है, दूसरी ओर लोकपक्ष में आकर पारिवारिक और सामाजिक कर्तव्यों का सौंदर्य दिखाकर मुग्ध करती है। व्यक्तिगत साधना के साथ लोकधर्म की अत्यंत उज्ज्वल छटा उसमें वर्तमान है।" (रामभक्ति शाखा - हिंदी साहित्य का इतिहास) वास्तव में नवधा भक्ति दो युगों में दो लोगों द्वारा कही गयी, सतयुग में प्रह्लाद ने पिता हिरण्यकशिपु एवं त्रेतायुग में श्रीराम ने माँ शबरी से कहा। जिसमें परमात्मा की प्राप्ति के नौ साधन बताये, इन्हीं नौ साधनों को मुनियों तथा ज्ञानियों ने नवधा भक्ति का नाम दिया है। इससे पूर्व श्रीमद्भागवत के सातवें स्कंध के पाँचवें अध्याय में नवधा भक्ति का सूत्र मिलता है, जिसके अंतर्गत हिरण्यकशिपु ने पुत्र प्रह्लाद को अपनी गोद में बैठाकर पूछा, "बेटा, तुमने गुरुजी से जो शिक्षा प्राप्त की है, उसमें कोई अच्छी बात हमें सुनाओ। श्री प्रह्लाद उवाच - श्रवण कीर्तन विष्णोः स्मरणं पादसेवनम्। वंदनं दास्य सख्यमात्म निवेदनम्।

इसी सूत्र को 'मानस' की राम कथा में बाबा तुलसीदास ने संस्कृत की तत्सम मिश्रित अवधि की लोक भाषा में व्याख्यायित करते हुए उसे सरल-सुगम रूप में अभिव्यक्त किया। भक्ति के इस मार्ग का अनुसरण करने से प्रभु में प्रेम जागता है, जिसे संत कबीर ने भी 'ढाई आखर प्रेम' कहा था। नवधा भक्ति का पहला साधन है सत्संग, अर्थात् परमात्मा के साथ प्रेम करने वाले महापुरुषों का संग करो। दूसरा उपाय है - कथा श्रवण, जिसको सुनने से मन शांत होता है। तीसरा साधन है - अभिमान रहित होकर गुरु के चरणों की सेवा करना। और चौथा है - परमात्मा की स्तुति, क्योंकि भक्तिमार्ग में भगवद् गुणगान प्रधान है। पंचम के लिए प्रभु कहते हैं - 'मन्त्र जाप मम दृढ बिस्वासा' यानी 'राम मन्त्र' का निरंतर जाप। छठी में भक्ति को विस्तार देते हुए प्रभु उसमें इन्द्रियों का निग्रह, शील स्वभाव, बहुत कार्यों से वैराग्य और संत पुरुषों के धर्म में लगे रहना बताते हैं। सातवीं में प्रभु सम्पूर्ण जगत को राममय देखना एवं संतों को श्रीराम से भी अधिक करके मानना कहते हैं, जिसका सीधा-सीधा तात्पर्य स्वयं या 'गोविन्द' से भी अधिक 'गुरु' को महत्ता देना है। भक्ति के आठवें साधन में 'जो मिल जाए उसी में संतोष करना तथा स्वप्न में भी पराये दोषों को न देखना इत्यादि शामिल हैं। नौवीं और अंतिम साधन में प्रभु शबरी को बताते हैं कि सबके साथ कपटरहित बर्ताव करना और किसी भी अवस्था में हर्ष एवं विषाद का न होना आवश्यक है। इन के साथ भक्ति में सरलता और हृदय में मेरा भरोसा अति आवश्यक है - 'मम भरोसा हियाँ।' चूँकि शबरी में सभी प्रकार की भक्ति दृढ़ है इसीलिए प्रभु श्री राम कहते हैं - जोगि वृंद दुरलभ गति जोई। तो कहूँ आजु सुलभ भइ सोई।' इस प्रकार गोस्वामी तुलसीदास ने 'श्री रामचरित मानस' काव्य ग्रन्थ में श्री राम के मुख से नवधा भक्ति का तात्त्विक उल्लेख करवाया एवं तदोपरांत श्री राम शबरी से श्री सीता जी के विषय में पूछते हैं। उत्तर देते हुए शबरी ने पम्पा सरोवर जाने को कहा, जहाँ ऋष्यमूक पर्वत पर सुग्रीव से मित्रता की बात कही। अंत में श्रीराम के दर्शन करते-करते शबरी ने योगाग्नि से देह भस्म कर दी,

जिसका उल्लेख बाल्मीकि रामायण में भी हुआ है - 'रामसंदर्शनान्मुक्ति प्राप्ता वैकुण्ठमाययो।' यद्वापि बाल्मीकि रामायण में श्री राम को पुरुषोत्तम या महापुरुष के रूप में चित्रित किया है, किन्तु वैदिक युग से लेकर पौराणिक युग तक जैसे-जैसे ज्ञान और कर्म की अपेक्षा भक्ति का विकास होता गया, वैसे-वैसे विष्णु के अवतार के रूप में उनकी प्रतिष्ठा दृढ़ होती चली गयी। वैष्णव भक्ति के उद्भव और विकास की इस परम्परा में रामानुज, रामानंद आदि आचार्यों ने रामकथा को दर्शन एवं भक्ति की सहजग्राह्य मनोवैज्ञानिक भावभूमि प्रदान की। बाबा तुलसीदास ने मध्य युग की नैराश्य पूर्ण स्थिति को देखकर 'मानस' में श्री राम का ऐसा चरित्र प्रत्यक्ष खड़ा कर दिया कि जो लोकसंग्रह एवं लोकमंगल से अभिप्रेरित है। वैसे भी 'मानस' का प्रत्येक चरित्र प्रभु श्री राम काज के यज्ञ में अपनी-अपनी आहुति डालता है एवं सम्पूर्ण रामकथा का विकास इसी भक्ति भावना के केंद्र के इर्द-गिर्द होता है। नवधा भक्ति की साक्षात् मूरत शबरी के अतिरिक्त राम कथा के अन्य सभी पात्र भी श्री राम की भक्ति पाने को लालायित हैं। इनमें 'निषाद, केवट, सेवक, दासी इत्यादि निम्न जाति के मानव और मानवेत्तर पात्र हनुमान, सुग्रीव, जामवंत, जटायु एवं समस्त वानर जाति इसी भक्ति-भाव के उपक्रम हेतु उद्भूत है। राक्षस कुल के भी चरित्र अपनी सहमति-असहमति द्वारा श्री राम की महती योजना में कर्मरत है। जैसे मानस के सुंदरकांड में भी रावण द्वारा विभीषण को लंका के दरबार से अपमानित करके निकाल देने पर, वह समुद्र पार श्री राम की शरण में आता है एवं उनसे विनय करता है, 'अब कृपाल निज भगति पावनी। देहु सदा सिव मन भावनी।' इस प्रकार युग की माँग के अनुसार बाबा तुलसी दास ने शैव एवं वैष्णव धर्म को एकीकृत करके, सभी पात्रों को अपने-अपने आचरण से प्रभु श्री राम के महान यज्ञ में आहुति देते हुए चित्रित किया है। इसी कारण इनकी भक्ति रस भरी वाणी जैसी मंगलकारिणी मानी गयी, वैसी किसी और की नहीं। डॉक्टर विजयेंद्र स्नातक के शब्दों में, "तुलसी का समन्वयवाद उनकी भक्ति-भावना में भी दिखाई देता है। रामचरित मानस में उन्होंने राम और शिव दोनों को एक-दूसरे का भक्त अंकित करके वैष्णव एवं शैव सम्प्रदायों को एक ही सामान्य भावभूमि प्रदान की है।" (हिंदी साहित्य का इतिहास, सम्पादक - डॉक्टर नगेंद्र)

अंततः बाबा तुलसीदास ने बाल्मीकि रामायण की सीता परित्याग या निर्वासन की कथा का अनुसरण न करके, 'श्री रामचरित मानस' ग्रन्थ में अंतिम सोपान 'उत्तरकाण्ड' नाम से सम्मिलित किया। जिसमें सगुण-निर्गुण सिद्धांत सम्बंधित वार्तालाप में काकभुशिन्डी - गरुड संवाद के साथ लोकेश मुनि की कथा चलती है, जिसका मूल उद्देश्य भी भक्ति के महत्व को प्रतिपादित करना है। चूँकि माया और भक्ति दोनों नारी हैं, लेकिन महाकवि तुलसीदास ने साफ़ कहा 'मोह न नारि नारि के रूपा।' अर्थात् भक्ति के सम्मुख माया भी वार नहीं करती, क्योंकि श्री रघुनाथ को भक्ति प्यारी है, माया तो नटिनी मात्र है। वस्तुतः शबरी अपनी नवधा भक्ति के कारण भक्ति स्वरूप का दिव्य प्रतिमान है, जिस के लिए प्रभु श्री राम स्वयं कहते हैं - 'सकल प्रकार भगति दृढ तोरे।' इसीलिए जो गति योगियों को भी दुर्लभ है, वह शबरी को अपनी भक्ति के कारण सहज सुलभ हुई। वस्तुतः धर्म का प्रवाह कर्म, ज्ञान और भक्ति इन तीन धाराओं में चलता है एवं इन तीनों के सामंजस्य से धर्म अपनी पूर्ण सजीव दशा में रहता है। किसी एक के अभाव

से वह विकलांग रहता है। कर्म के बिना वह लूला-लंगड़ा, ज्ञान के बिना अंधा और भक्ति के बिना हृदय विहीन क्या निष्प्राण रहता है।" गोस्वामी जी की भक्ति-पद्धति की सबसे बड़ी विशेषता है उसकी सर्वांगपूर्णता। जीवन के किसी पक्ष को सर्वथा छोड़कर वह नहीं चलती है, सब पक्षों के साथ उसका सामंजस्य है। न उसका कर्म या धर्म से विरोध है, न ज्ञान से। धर्म तो उसका नित्य लक्षण है। तुलसी की भक्ति को धर्म और ज्ञान दोनों की रसानुभूति कह सकते हैं, योग का भी उसमें समन्वय है, पर उतने ही का जितना ध्यान के लिए, चित्त को एकाग्र करने के लिए आवश्यक है।" (आचार्य रामचंद्र शुक्ल) इस प्रकार बाबा तुलसी दास की श्री राम भक्ति की धारा का यह प्रवाह नागर, ग्राम्य और वन्य सभी क्षेत्रों में निर्बाध बहता है एवं 'मानस' की लोकप्रियता का मुख्य कारण भी यही है। जिससे यह ग्रंथ राजा का महल हो या रंक की झोंपड़ी, सभी में समान पठनीय और पूजनीय है। महाकवि तुलसीदास अपने ही तक दृष्टि रखने वाले भक्त न थे, संसार को भी दृष्टि फैलाकर देखनेवाले भक्त थे। शबरी की भक्ति के औचित्य से उन्हें 'शूद्र' अथवा 'नारी' निंदक कहना अनुचित है।

हिंदी - भारत की भाव भाषा

डॉ. साकेत सहाय

मुझे हिंदी से प्रेम है
बचपन से है यह मुझसे
घुला-मिला
पेशावर से पोखरण तक
कोच्चि से चटगाँव तक.
किसी के लिए है यह राष्ट्रीय भाषा
किसी के लिए है यह राष्ट्रभाषा
किसी के लिए है यह सम्पर्क भाषा
किसी के लिए है यह जनभाषा
पर भाव एक ही है
सबके लिए है यह
प्रेम, लगाव और जुड़ाव की भाषा
तभी बनी देश की राजभाषा.
है यह संस्कृत की पुत्री
पर सींचित हुई सभी से
कभी दक्षिण से
कभी उत्तर से कभी पूर्व से
कभी पश्चिम से.
हर कोई करें

इसका सम्मान।
 संस्कृत इसकी जननी है,
 है यह प्रेम और लगाव की अमरबेल।
 भारत माँ है
 भाषाओं की थाल,
 पर हिंदी है हम सबकी चहेती
 हिंदी को जब मन से पढ़ा
 जाग्रत हुआ भारत-विवेक।
 हिंदी से स्वाधीनता,
 एकता, सम्पर्क के भाव हो पूरे।
 लिखते-बोलते कवि, लेखक, नेता, अभिनेता हिंदी में
 बड़े-बड़े संदेश भी अक्सर
 बोले-सुने जाते हिंदी में।
 गाँधीगीरी से आज़ाद-भगत,
 कबीर से रवीन्द्र
 तुलसी से प्रेमचंद
 नानक से शिवाजी तक
 लता से रफी
 आशा से किशोर
 राजेंद्र से कलाम तक
 फुले से बाबा साहब तक
 सुब्रमण्यम से नामदेव तक
 सब हिंदी को जुबाँ से दिल तक लाए.
 है हिंदी माँ भारती की आवाज़
 हिंदी देती सबको मान
 सरल-सहज शब्दों में
 सब इसका करें बखान।
 अरब से लेकर अमरीका तक।
 हिंदी मिले, जब दिल से
 निकले दिल से प्रेम की ज्योति
 है यह सब भाषाओं की सम्पर्क सूत्र
 इसीलिए सबको लगे विशेष।
 जब बोले हम हिंदी में
 हो जाएँ हम एक
 आइए हम सब मिल करें
 एक पहल
 करें सम्मान हिंदी का,
 समझे इसका मान
 हिंदी है भारत वाणी की अमरबेल !

शांकर-प्रश्नोत्तरी का जीवन दर्शन

डॉ. साधना गुप्ता

(वर्ल्ड बुक ऑफ़ रिकॉर्ड, लन्दन में नाम अंकित)

आद्य जगत्-गुरु शंकराचार्य ने हिंदू दर्शन की व वैदिक दर्शनशास्त्र के तत्त्ववाद, अद्वैत सिद्धांत को ही विशेष रूप से प्रतिष्ठित किया है और जीवन मुक्ति की अवस्था को ही मानव जीवन की सर्वोत्कृष्ट अवस्था घोषित किया है। विचार मात्र से सब कुछ कर सकने की सामर्थ्य से अधिक सामर्थ्य और हो भी क्या सकती है? वस्तुतः यही निष्ठा मानव जीवन के विकास की सर्वश्रेष्ठ अवस्था है और सर्वमान्य भी, क्योंकि यही वह सर्व कल्याणकारी, विश्व पोषक, मंगलकारी, प्रभावोत्पादक दृष्टि है - जिसके माध्यम से विश्व-पोषकता के रहस्य को हृदयस्थ किया जा सकता है।

इस दूरदर्शिता को दृष्टिगत रखते हुए आचार्य शंकर ने मात्र चौबीस वर्ष की अल्पावस्था में 'प्रश्नोत्तरी' की रचना कर मानवीय मूल्यों को शाश्वतता प्रदान करते हुए कई उलझी हुई गुत्थियों को परत दर परत खोल कर रख दिया। परिणामतः यह ग्रंथ लघुतर होने पर भी पथ प्रदर्शक महनीयता को प्राप्त कर गया है।

प्रश्नोत्तरी के संस्कृत श्लोकों के विभिन्न अंगों पर दृष्टि निपात करने पर पद-पद पर उसकी महती विशेषताएँ प्रत्यक्ष प्रमाणित होती जाती है। इस ग्रंथ की सर्वांगीण पूर्णता एवं उपादेयता के प्रतिपादन में भले ही अनंत रहस्यमय विशाल ग्रंथ लिखे गए हों या लिखे जाएँ, किंतु विश्व की समस्त संस्कृतियों के समक्ष उज्ज्वल मुँख, उन्नत ललाट किए खड़ी रहेगी यह 'प्रश्नोत्तरी'।

हिंदी कविता कानन में कवीन्द्र हरनाथ ने 'प्रश्नोत्तरी पद्यानुवाद' रूपी अशोक वृक्ष रोप कर हिंदी प्रेमियों को आद्य शंकराचार्य के अत्यधिक निकट लाकर खड़ा कर दिया, जिसके सम्बन्ध में अथर्ववेद उद्धोषणा करता है कि - 'तमेव विद्वान् न विभाय मृत्योः' अर्थात् उस परमात्मा को जान लेने वाला मनुष्य मृत्यु से नहीं डरता है। जो अविश्वासी हैं, उनकी तो बात करना ही यहाँ असंगत होगा किंतु जो निष्ठावान विश्वासी हैं, उनके लिए उल्लेखनीय सत्य यह है कि सृष्टि कर्ता सर्वज्ञ है और वह है - स्वस्थ चेतन।

हरनाथ जी ने अपने दीर्घ अनुभव, तपःपूत ज्ञान और निरंतर चिंतन द्वारा जो आत्म साक्षात्कार किया, उसी के परम पुरुषार्थ ने आपके भावी जीवन को समाज के अंतिम हित संबर्द्धन की दिशा दी जिसकी परिणति है - 'प्रश्नोत्तरी पद्यानुवाद'।

जीवन और जगत् का सार प्रस्तुत करने वाली यह रचना 'गागर में सागर' की उक्ति को सार्थकता देते हुए अपने प्रथम पद्य में ही भव विभव में पड़े फँसे छटपटाते जीवों को अतिशय अपार भवसागर से पार उतारने हेतु पथ प्रशस्त करती है - भव-नीर निधि में परयो हो, गुरुदेव! शरण बताइये।

अतिशय अपार समुद्र को, कछु पार क्यों करि पाइये।
हरनाथ! मंगल मूर्ति हरि के, पद्य-पद नित ध्याइये।
करि सहज तिनकी नाव, भीषण भव-जलधि तर जाइये।

आचार्य श्री के मन में जो जो संकल्प-विकल्प एक साथ उठ खड़े हुए, उनमें जीव का जगत बंधन, मुक्ति, विरक्ति तथा नर्क और स्वर्ग की उलझन से त्राण पाने की युक्ति के समाधान क्रमानुसार दृष्टव्य हैं - विषय वासना से मुक्ति, आत्म शुद्धि, देह को ही आत्मा मानना और तृष्णा रहित जीवनचर्या व्यतीत करना ही जीवन का परम लक्ष्य है -

है जग बंध्यो जन कौन? जाकी विषम विषयानि वासना।

अरु मुक्त कौन? विरक्ति, विषयनि शुद्ध आत्म-उपासना।

कहु नरक घोर कहाँ यहाँ? निज देह कल्पित भासना।

त्योँ स्वर्ग सम्भव पद कहाँ? हत तरल तृष्णा नासना।

आगे कुछ अन्य प्रश्नों के प्रति भी जिज्ञासु दिखाई देते हैं - कौन सत् अपेक्षी गुरु है? गुरु भक्त शिष्य कौन है? तथा ऐसा कौनसा असाध्य रोग है जिसकी औषधि अप्राप्य हो? इनके उत्तर भी कितने सटीक बन पड़े हैं - जो उपदेष्टा है, निर्मल-निश्छल बुद्धि वाला है तथा जन्म मरण रूपी चिंता के असाध्य रोग का आत्म चिंतन द्वारा निदान किया जा सकता है -

गुरुवर कहो- गुरु कौन है? जो देत हित उपदेश ही।

पुनि शिष्य को? गुरु भक्ति भाजन, विमल बोध विशेष ही।

हे रोग कौन असाध्य या जग? जन्म मरण क्लेश ही ।

तिमि तासु औषध है कहाँ ? आत्म विचार हमेश ही।

प्रश्न माला में सुमनों की विविधता है। पुनः पूछ बैठते हैं - संसार के समस्त विषयों में कौन-सा सर्वाधिक मारक है? इस धरा धाम पर सर्वथा दुःखी कौन है? तथा किस का जीवन धन्य है? सर्व पूज्यमान इस पृथ्वी पर कौन है? इन प्रश्नों को अनुत्तरीय वही कह सकता है जिसने प्रश्नोत्तरी का अध्ययन नहीं किया। प्रश्नोत्तरी के पास इनके समाधान है - वासना ही विषय है, विषयानुरक्ति ही दुःख का मूल कारण तथा परहित की भावना ही जीवन को धन्य करने वाली है और सार्वकालिक पूज्य है - ब्रह्म का विचार - कहु कौन हलाहल विषम विष? विषय ही सब लेखिये।

पुनि कौन वसुधा पर दुःखी? रति जासु विषयनि देखिये।

गुरुदेव! कहिये धन्य कहि? अनन्य परहित पेखिये।

पुनि पूज्य पुहुमी कौन? ब्रह्म विचार-रत अवरेखिये।

पुनः एक कदम आगे बढ़ाते हुए प्रश्न कर उठते हैं - संसार की लघुता गुरुता पर, वसुधा पर अजन्मे जीव पर तथा मृत सम कौन है? उत्तर सापेक्ष है - याचना की मूल भावना लघुता का द्योतक है तथा गुरुता

का मूल आधार है - अयाचित जीवन। अजन्मा वह है जिसका पुनर्जन्म न हुआ हो। मूलतः मृत व्यक्ति वह है जिसे एक बार मरने के उपरांत पुनः न मरना पड़े -

संसार में लघुता कहाँ है? इक याचना ही जानिये।

पुनि कहाँ गुरुता मूल? कबहूँ न माँगि तोहि प्रभानिये।

या जगत जन्मयों कौन? जाकी पुनि न जन्म बखानिये।

अरु मृतक कहिये काहि? जासु न मृत्यु पुनि अनुमानिये।

अंत में आचार्यश्री प्रणतिपाद होना भी नहीं भूले हैं : 'प्रश्नोत्तरी' के प्रति। धन्य है उनकी यह श्रद्धा जो इस भवसागर के प्राणी मात्र को प्रश्नोत्तरी के कंठाभरण, तथा श्रवण करने को निर्दिष्ट करती है। ऐसी भावुकतामयी मंजुलता, आनंददायिनी सुखानुभूति, ब्रह्म रस में सराबोर कर देने की क्षमता युक्त यह पदावली कितनी भावुक है और है मनभावनी -

प्रश्नोत्तरी मणिरत्न माला, कलित कंठ सुहावनी।

श्रवणाभरण मंजुल महा, हरनाथ भावुक भावनी।

हरि-हर कथा इत दिव्य, आनंद-रस सुख सरसावनी।

कवि को वदन को नित रहे, यह ब्रह्म रस बरसावनी।

हिंदी साहित्य, विशेषतः ब्रज भाषा में पद्यानुवाद कर कवीन्द्र ने यह प्रमाणित कर दिखाया है कि सजीव एवं लोक-व्यवहार की भाषा विद्वत् समाज में समादृत होती है। आनन्द तब और भी बढ़ जाता है जब पाठक के समक्ष दोनों भाषाएँ प्रत्यक्ष हों। अध्ययन-मनन की दृष्टि से यह आवश्यक भी है।

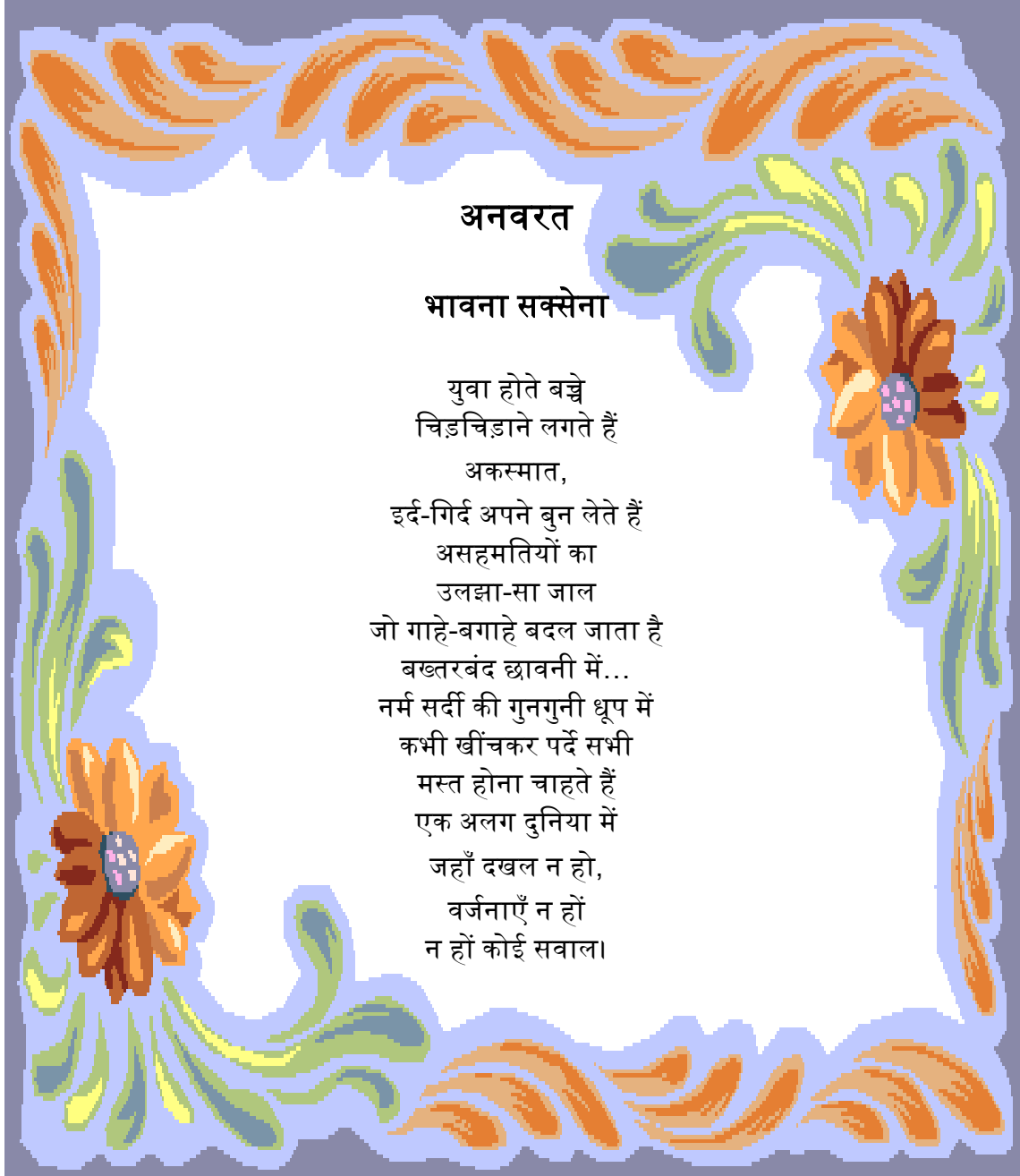
यहाँ यह तथ्य भी स्मरणीय है कि नीतिशतक लिखते समय भर्तृहरि ने भी इसी 'प्रश्नोत्तरी' का अनुसरण किया था।

हरिगीतिका छन्द में अनुवादित शीर्षस्थ पुरुष की 'प्रश्नोत्तरी' में भाव व प्रवाहपूर्ण शब्दावली का मणिकांचन योग है। क्यों न हो? इसमें वह सभी कुछ तो है जो जीवन की उषा-काल विधायक रचना में विद्यमान होता है या होना चाहिए। कवि द्वारा प्रयुक्त छन्द की विशुद्धता, लयबद्धता, यति-गति का अनुपम अनूठा ज्ञान, स्वाभाविकता, अर्थ सौष्ठव और प्रसाद गुण की स्निग्धता का मंजुल सन्निवेश अद्वितीय ही है।

इस चमत्कार के पार्श्व में हमें देखना होगा - 'छन्द' के प्रत्येक चरण के पूर्वार्द्ध में प्रश्न और उत्तरार्द्ध में उसका उत्तर है। इसे यूँ भी समझा जा सकता है कि - प्रथम शंका है फिर तत्काल उसका समाधान, ठीक भगवद्गीता की पद्धति पर। प्रश्न कर्ता के मन में प्रश्न की अकुलाहट बनी नहीं रहती, शांत होती जाती है। इसका एक वैशिष्ट्य यह भी है कि आत्मतत्त्व और परमतत्त्व की दार्शनिक-आध्यात्मिक उन्नति का एक मात्र आधार गुरुदेव अथवा आराध्य देव की कृपा पर ही आश्रित है, यह माना है - " ज्ञान प्राप्ति की दृष्टि से किया गया अध्ययन ही विश्वास उत्पन्न करता है", अस्तु यह मात्र भावनात्मक श्रद्धांजलि ही नहीं,

अपितु कवीन्द्र की पुरुषार्थ जन्य श्रद्धांजलि भी है - "अपने आराध्य के प्रति"। इसकी पुष्टि साहित्य मनीषी 'वियोगी हरि' द्वारा पुस्तिका की भूमिका में कही यह पक्तियाँ भी करती है - "अब तक संस्कृतज्ञ ही इसका रस पान करते थे, अब हमारे हिंदी भाषा-भाषी भी इस अमूल्य सुधा का पान कर सकेंगे।"

वस्तुतः इस पद्यानुवाद का एक मात्र सत्य यही है कि कवीन्द्र ने निर्लेप, निर्विकार भाव से शंकराचार्य के भावों एवं विचारों को अभिव्यक्ति दी है जो इस सत्य, इस तथ्य की ओर इंगित करती है कि कवीन्द्र के मन-मस्तिष्क में एक विचारशील दार्शनिक की दृष्टि एवं लोक सभ्यता के उत्थापक परिव्राजक तार्किक शिरोमणि शंकराचार्य के यायावरी जीवन की परिकल्पना विद्यमान थी।



तो कभी
चिलचिलाती धूप में
निकल पड़ते हैं
खुद को खोजने
खाली हाथ,
चप्पल चटकाते
आईने से बेपरवाह।
दुनिया अचानक
बदलने लगती है उनके लिए
मानो न उन्हें कोई समझता है
न वे किसी को समझते हैं।
जिन उँगलियों को थाम
सीखे डग भरना,
छलनी करता है
उनका अपनी ओर उठना,
युवाओं के माता-पिता
अक्सर भूल जाते हैं अपने दिन
जब अल्हड़ बेपरवाह
घूमते थे गलियों और चौबारों पर,
बाँधना चाहते हैं हवा को
जो अमूमन सरक जाती है
बारीक झिर्रियों से...
बाँधकर रखने
और खुलकर उड़ान भरने की
जद्दोजहद का एक चक्र
घूमता रहता है
अनथक
अनवरत।

निराला जी के काव्य में राष्ट्रीय चेतना

डॉ. विपुला सिंह

निराला जी मुक्तिगामी चेतना के क्रांतिकारी कवि हैं। उनकी क्रांति-धर्मिता का लक्ष्य भारत को विदेशी आक्रान्ताओं से मुक्त कराकर भारतीय धरा का सृजनात्मक विकास करना था। इस भावोद्वेलन ने उन्हें कभी मातृवन्दना के लिए प्रेरित किया तो कभी राम, तुलसी और शिवाजी के माध्यम से सुसुप्त जनमानस को उठकर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। इस तरह उनकी राष्ट्रीय कविता का धरातल बड़ा ही विस्तृत और बहुरंगी है।

निराला की राष्ट्रीयता, सांस्कृतिक गौरव से परिपूर्ण आध्यात्मिकता से समृद्ध और उज्ज्वल भविष्य की आकांक्षा से युक्त एक व्यापक और गतिशील चेतना है। उनकी सांस्कृतिक चेतना जाति, समाज और देश तक - एक विस्तृत मानवीय धरातल पर प्रस्तुत होने वाली व्यापक चेतना है, जिसमें जागरण का स्वर उच्चरित है। स्वामी विवेकानंद और टैगोर के सम्पर्क से उपजी आध्यात्मिकता की गहराई है और लोकमान्य तिलक के वैचारिक विद्रोह से उत्प्रेरित जीवनमयी वाणी है। उनके राष्ट्रीय गीतों में भारत के गौरवपूर्ण चित्र समकालीन सामाजिक, आर्थिक वैषम्य तथा आदर्श और उज्ज्वल भविष्य की आकांक्षा स्पष्ट रूप से झलकती है।

जिन राष्ट्रगीतों का निर्माण कविवर निराला जी ने किया है उसमें 'भारति जय विजय करे' अत्यन्त प्रसिद्ध गीत है, जो देश के विविध प्रान्तों में गाया जाता है।

आचार्य नन्द दुलारे बाजपेयी के शब्दों में- "राष्ट्र गीतों के अनुरूप राष्ट्रीय उत्कर्ष और गौरव की भावना तथा उसके सौन्दर्य और ऐश्वर्य का प्राचीन सांस्कृतिक प्रतीकों के माध्यम से आलेखन किया गया है। राष्ट्र गीतों के सभी मूल तत्व इन गीतों में प्राप्त होते हैं। राष्ट्रीय गीतों में निराला जी की दृष्टि केवल राष्ट्रीय जीवन के उत्कर्ष से सम्बन्धित नहीं है बल्कि उनमें राष्ट्र की अधोगामी विषमता आदि के भी भावों का स्पंदन है।"

निराला जी ने अतीत की गरिमा और आदर्श चरित्रों का भव्य चित्रांकन किया है। गुलामी की जंजीरों में जकड़ी हुई हीन भावना से ग्रस्त जन-चेतना को उद्बुद्ध करने के लिए उन्होंने अपना प्रसिद्ध उद्बोधन गीत 'जागो फिर एक बार' लिखा। इस कविता में निराला जी ने आधुनिक भारतीय जनमानस को प्रेरणा स्फूर्ति, ओज एवं अतीत की गौरव भावना से भावित कर उद्बुद्ध करने की चेष्टा की है।

“पशु नहीं, वीर तुम

समर-शूर क्रूर नहीं,

कालचक्र में ही दबे,

आज तुम राज कुँवर,

समर सर ताज

मुक्त हो सदा ही तुम

बाधा विहिन - बन्ध छन्द ज्यों ।”

कविवर निराला के उद्बोधन गीत में कवि की ओजमयी वाणी की झंकार सुनाई पड़ती है।

“समर में अमर कर प्राण
गान गाए महासिन्धु से
सिन्धु नद तीर वासी
सैन्धव तुरंगों पर,
चतुरंग-चूम-संग
सवा-सवा लाख पर
एक को चढ़ाऊँगा.
गोविन्द सिंह निज
नाम जब कहाऊँगा.”

इस तरह निराला जी ने राजनैतिक गतिविधियों, राष्ट्र के गौरव पर अनेक रचनाएँ लिखी हैं। जीवन में निरन्तर संघर्ष करने के बाद जब निराला जी ने राजनैतिक क्षेत्र में आर्थिक ढाँचे पर, प्रतिष्ठित नेतागिरी पर भी कठोर प्रहार करते हुए बेला, भिक्षुक, तोड़ती पत्थर जैसी रचनाएँ लिखीं।

छायावादी कविता में राष्ट्रीयता से ओतप्रोत व गौरवशाली परम्परा का उन्हें जितना ज्ञान और बोध था उतना अन्य किसी कवि की रचनाओं में व्यक्त नहीं हुआ। निराला जी जीवन और साहित्य (कला) दोनों में महान थे। ‘भारती’ की वन्दना करते हुए ‘भारत जय विजय करें’ की आकांक्षा करते हैं। वे वीणा-वादिनी से प्रार्थना सिर्फ अपने लिए नहीं अपने देश भारत के लिए करते हैं। मिर्जा राजा जय सिंह के नाम शिवाजी का पत्र राष्ट्रीय गौरव का अमूल्य धरोहर है। वे भारतीय संस्कृति के सर्वोत्तम अंश के कवि हैं। वे अपनी कविताओं के माध्यम से भारतवासियों को देश के लिए अपना सर्वस्व अर्पण करने के लिए सतत प्रेरित करते जान पड़ते हैं।

‘जागो फिर एक बार’ के प्रथम भाग में प्राकृतिक उपादानों से प्रेरित जागरण का गीत है। इसमें आकाश के तारे भी जागृति का स्वर गाते हैं और प्रातः काल की अरुण-तरुण-किरण भी जागृति का द्वार खोलती है। इस प्रच्छन्न संकेतात्मक पद्धति पर जागृति का गीत गाकर कवि प्रत्यक्ष भावोत्जन और वीर रसात्मक उदात्त काव्य का सृजन करता है।

दूसरे भाग में विभिन्न ऐतिहासिक परिदृश्य और सांस्कृतिक उपलब्धियों का उल्लेख कर वीरत्व की व्यंजना की गई है। इस कविता के माध्यम से आधुनिक भारतीय जनमानस में प्रेरणा, स्फूर्ति, ओज तथा गौरव की भावना भरते हुए समग्र देश को तदा से जागृति की ओर ले जाने का प्रयत्न किया है।

कविवर निराला छत्रपति शिवाजी का पत्र में शिवाजी के आदर्श चरित्र एवं शौर्य के प्रस्तुतिकरण के द्वारा जनमानस के मन, देश के स्वाभिमान की रक्षा करने का संदेश देते हैं। यहाँ कुछ पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं

-

“शत्रुओं के खून से
धो सके यदि एक भी तुम माँ का दाग,
कितना अनुराग देशवासियों का पाओगे.
निर्जर हो जाओ –
अमर कहलाओगे।”

निराला जी का युग-बोध बहुत गहरा था। यही कारण है कि उन्होंने देश की सामाजिक विभीषिका, आर्थिक शोषण की प्रवृत्ति, धर्मान्धता और अमानवीयता पर गहरा क्षोभ प्रकट किया है। देश

की दारुण दशा देखकर वे तिलमिला कर सांस्कृतिक पतन पर व्यंग्य करते हुए मानव को यह निश्चित प्रेरणा प्रदान करते हैं।

“करना होगा वह तिमिर पार,
देखना सत्य का मिहिर द्वार
बहना जीवन के प्रमुख ज्वार में निश्चय।”

मजदूरों, कुलियों और दलित शोषित वर्ग के जितने मर्मस्पर्शी चित्र निराला ने दिए हैं वह अनुपम हैं। भिक्षुक, वह तोड़ती पत्थर जैसी सशक्त कविताएँ एक तरफ जहाँ उनकी दुरावस्था और विवशता को अंकित करती हैं, दूसरी तरफ मानव ‘जहाँ बैल घोड़ा है, कैसे तन-मन का जोड़ा है’ में मानवीय विशेषताओं पर व्यंग्य किया गया है।

निराला ने राष्ट्रीय चेतना के निर्माण में युगान्तकारी भूमिका भी एक साहित्यिक रूप में निभाई। राष्ट्रीय आन्दोलन कुछ लोगों के लिए अँग्रेजों को हटाने भर का आन्दोलन था, किन्तु निराला का विचार इससे बिल्कुल भिन्न था। उनकी समझ से एक व्यापक सामाजिक क्रांति न केवल इसलिए आवश्यक थी कि पुरानी व्यवस्था सदियों पहले जर्जर हो चुकी है, वरन इसलिए भी कि शिक्षित युवाओं में सामाजिक जागरूकता आये। अन्यान्य समस्याओं को लेकर निराला जी ने जो कुछ भी लिखा था वह राजनैतिक दाँव-पेंच से भी बहुत आगे था। वे युवा वर्ग को साम्राज्यवाद को ध्वस्त करने के लिए प्रेरित करते हुए कहते हैं

“चूम चरण मत चोरों के तू
गले लिपट मत गोरों के तू।”

कुकुरमुत्ता, नये पत्ते में न जाने कितने ऐसे चित्र मिलेंगे जो इस देश की सामाजिक, आर्थिक विषमता और सांस्कृतिक गिरावट की सूचना देते हैं। इन कविताओं में न केवल वैषम्य के प्रति कवि का गहरा आक्रोश है बल्कि अमानवीय शोषण और अराजनीति पर गहरे व्यंग्य भी हैं।

“आज अमीरों की हवेली, किसानों की होगी पाठशाला

धोबी, पासी, चमार, तेली, खोलेंगे अँधेरे का ताला.”

महाकवि निराला की कविताओं में जहाँ अतीत के गौरवमयी चित्र हैं, मानवता का आदर्श है, वर्तमान का वैषम्यपूर्ण बोध है, वहीं उसमें उज्ज्वल भविष्य की आकांक्षा भी है। उन्होंने सुखी, स्वाधीन समाज की परिकल्पना की है। भारत के सामाजिक वैषम्य व अमानवीय कुकृत्यों और अराजनीतिक पर क्षोभ व्यक्त करते हुए कवि जहाँ तोड़ने और उनसे संघर्ष की बात करता है, वहीं उसमें भविष्य में उगने वाले सूर्य का सुन्दर आलोक भी आच्छादित है।

“जागा दिशा ज्ञान,
उगा रवि पूर्व का गगन में नवमान
हारे हुए सकल सैन्य दलमल चले
जीने हुये लगे जीते हुए गले
बन्द वह विश्व में गूँजा विजयगान।”

निराला जी विश्व कवि हैं। अपनी जन्मभूमि के प्रति उनमें अगाध श्रद्धा तथा प्रेमभाव है, लेकिन उनकी राष्ट्रीयता तथा राजनीतिक विचारधारा विशुद्ध सांस्कृतिक आधार पर अवस्थित है। निराला ने ‘भारति जय विजय करें’ तथा ‘भारत ही रतन धन’ जैसे गीतों की रचना कर अपनी वाणी को मातृभूमि

की वेदना से गौरवान्वित किया है और वे हर भारतवासियों के कंठ से जन्म-भूमि के प्रति अनुरागासिक्त गान चाहते हैं। विदेशी आकांक्षाओं से पददलित, जन्मभूमि के चरणों में जीवन अर्पित करके उसके आँसुओं को पोंछ देने की कवि कामना करता है।

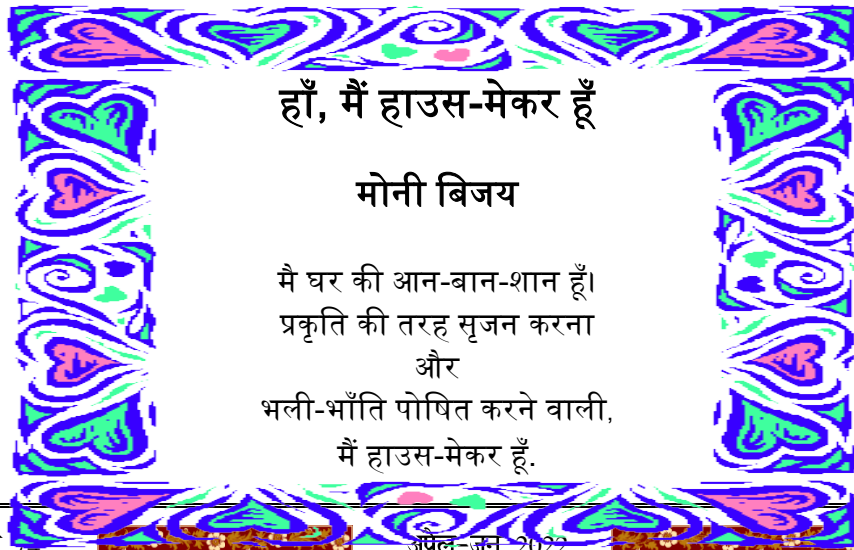
“नर जीवन के स्वार्थ सकल
बलि हों तेरे चरणों पर माँ,
मेरे श्रम संचित सब फल
जीवन के रथ पर चढ़कर।”

इस प्रकार महाप्राण निराला जी के गीतों में केवल राष्ट्रीय जीवन का उत्कर्ष ही चित्रित नहीं किया गया है, बल्कि उनमें राष्ट्र की अधोगति वास्तविक परिस्थितियाँ, विषमता आदि के भाव भी व्यक्त किए गए हैं। साथ ही इन गीतों में उज्ज्वल भविष्य की आकांक्षा और कल्पना भी विद्यमान है। इसके अतिरिक्त इन गीतों की सबसे बड़ी विशेषता है कि ये सामाजिक अवसरों पर गाए जाते हैं।

आचार्य नन्द दुलारे बाजपेयी जी के शब्दों में - “हिंदी के राष्ट्रीय गीतों में निराला की प्रणाली सबसे अधिक प्रतिष्ठित कही जा सकती है। अन्य गीतकारों के गीतों में सामूहिक गेयता नहीं आयी। निराला जी के राष्ट्रीय गीतों की पहली विशेषता उनकी गेयता है उनके गीतों का आकार राष्ट्रीय गीत के अनुरूप है।”

संदर्भ

१. डॉ. नामवर सिंह, छायावाद, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.सं. ७७
२. डॉ. सुरेन्द्र माथुर, आधुनिक हिन्दी साहित्य, शिवाजी प्रकाशन, लखनऊ, पृ.सं. १२०
३. रामलाल सिंह, कामायनी अनुशीलन, जालिपा देवी, काशी, पृ.सं. ९२

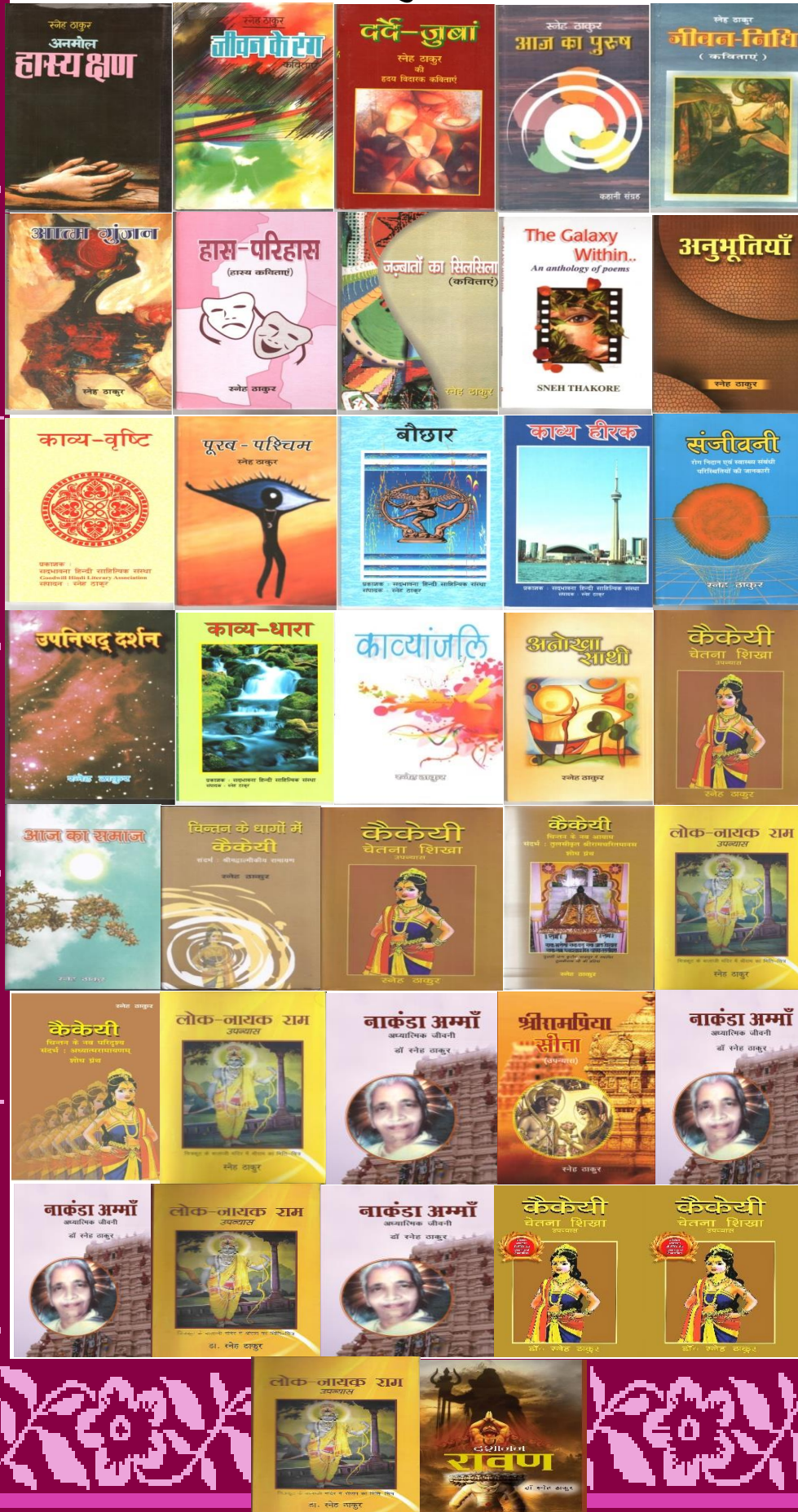




कभी बच्चों की टीचर बनती,
कभी डॉक्टर तो कभी दोस्त बन जाती
और
कभी अभिभावक बन उन्हें जीवन की हर डगर दिखाती
कदम-कदम सँभलना और मजबूत इरादे सिखाती
हाँ, मैं हाउस-मेकर हूँ
कभी पति की प्रेयसी बन मीठी मुस्कान से रिलैक्स कराती
कभी पत्नी की धर्म धारणी, नारायणी छवि बन धर्म निभाती
और,
कभी ऑफिस की प्रॉब्लम सुन, उनकी एडवाइजर बन जाती हूँ.
हाँ, मैं हाउस-मेकर हूँ
घर-रिश्ते-समाज से जुड़े रहने का जरिया मैं बन जाती हूँ
सास-ससुर और परिवार की केयरटेकर कहलाती हूँ
सबकी उम्मीदें मुझसे ही बँध जाती है
तभी तो,
मैं हाउस-मेकर कहलाती हूँ...
त्योहार की रौनक मुझसे
और चमक बढ़ जाती है,
मैं ना रहूँ घर में तो हर चमक..
फीकी पड़ जाती है..!
आर्किटेक्ट भी मैं, इंजीनियर भी मैं,
अकाउंटेंट भी मैं, डाइटिशियन भी मैं
लॉन्ट्री .. केटरर .. डोमेस्टिक डॉक्टर.. क्लीनर
जिस नाम से भी पुकारो, वही नाम बन जाती हूँ
माँ - पत्नी - बहू और घर की हाउस-मेकर कहलाती हूँ
बिना एवज लिए किसी काम की
दिन रात भिड़ जाती हूँ
मैं हाउस-मेकर खुद जलकर भी
दूसरों को ठंडक पहुँचाती हूँ
हाँ, मैं हाउस-मेकर हूँ तभी तो मैं घर बनाती हूँ..!



डॉ. स्नेह ठाकुर का रचना संसार





ਡਾ. Sneh #ak n kl pK aIx t p8tke

dxann rav`	Ü]pNyas Ý
nakDa AMma>	Ü A@yaiTmk j lvnI Ý
&lramipyá slta	Ü]pNyas Ý
l ok -nayk ram	Ü]pNyas, iptly sSkr` Ý
kEyl : icNtn kenv pirdxy - sdwR: A@yaTmramay` Ü xo2-gM4 Ý	
l ok -nayk ram	Ü]pNyas Ý
kEyl : icNtn kenv Aayam - sdwR: túslij t &lramcirtmans Ü xo2-gM4 Ý	
kEyl : cæna-ixqa	Ü]pNyas, saihTy Akadml m. p/
	Aiql wartly 'vIrish dæ' pæSkar sMman, iptly sSkr` Ý
icNtn ke2ago. mekEyl - sdwR: &lmdValmklly ramay` Üxo2-gM4Ý	
Aaj ka smaj	Ü samaj k l æ -sgħ Ý
kEyl : cæna-ixqa	Ü]pNyas, ra*`pit wvn pætkal y mesgÿhtÝ
Anoqa sa4l	Ü khaNI -sgħ Ý
kaVyaj il	Ü kaVy -sgħ Ý
kaVy -2ara	Ü skl n, spadn Ov. pKaxn Ý
]pin8d\dxR	Ü daxRnk Ov. A@yaiTmk Ý
sj lvnI	Ü SvaS\$y sMbN2l Aal æ Ý
kaVy hlrk	Ü skl n, spadn Ov. pKaxn Ý
b07ar	Ü skl n, spadn Ov. pKaxnÝ
pdb -piXcm	Ü AapxasI sMbiN2t Aal æ sgħ Ý
kaVy -vk*3	Ü skl n, spadn Ov. pKaxn Ý
AnwUtya>	Ü kaVy -sgħ Ý
The Galaxy Within	ÜA collection of English poemsÝ
j Jbato. ka isl isl a	Ü kaVy -sgħ Ý
has -pirhas	Ü haSy kivta0>Ý
AaTm -gju n	Ü A@yaiTmk -daxRnk glt Ý
j lvn -ini2	Ü kaVy -sgħ Ý
Aaj ka pæ8	Ü khaNI -sgħ Ý
ddRj ba>	Ü nJm v gj_l sgħ Ý
j lvn kerg	Ü kaVy -sgħ Ý
Anmol haSy 9`	Ü na3k -sgħ, fØrl gvnRæ3, kEða para Ai2k tm
	Andan sesMmaintÝ

pkaxk v ivtrk

```
S3ar piBl k& j _Üpā Ÿ il _
l Ÿ bl _ Aasf Al l roD
n{ idLI l - ÉÉÉÉÉÉ
wart
```

Star Publishers' Distributors
55, Warren Street
LONDON – W1T 5NW
England

idLL l p6 kl sirta v ANy ra^{...}ly Ov. ANtra^Rly
pi5kaAo. mewl rcna0>pkaixt